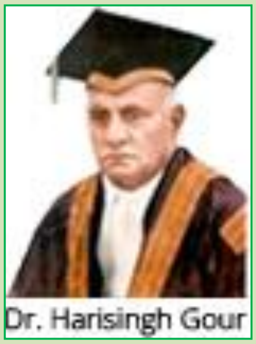

न्यूज़लेटर

जनवरी 2025

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर
विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श
डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय
कुलसचिव (प्र.)

संपादक
डॉ. विवेक जायसवाल
जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य
डॉ. हेमंत पाटीदार
डॉ. आशुतोष
डॉ. शालिनी चोइथरानी
डॉ. संजय शर्मा
माधव चंद्रा

20 वें वर्ल्ड पीस कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता 'महिला शांति शिक्षा नेतृत्व' पुरस्कार से सम्मानित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस (IAEWP) द्वारा

'महिला शांति शिक्षा में नेतृत्व' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान कार्यक्रम नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में आयोजित किया गया।

गौरतलब है कि इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस (IAEWP) संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बद्ध संस्था है। वर्ष 1969 में स्थापित इस अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन का उद्देश्य पूरी पृथ्वी पर शांति शिक्षा को प्रोत्साहित करना है, जिसकी पहली बैठक वर्ष 1970 में नार्वे में हुई थी। इसकी लोकप्रियता के आधार पर वर्ष 1973 में संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्धता प्राप्त हुई और तब से निरंतर ही शांति शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रही है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र बालकोष (यूनीसेफ) एवं यूनेस्को से भी सम्बद्ध है एवं विश्व भर के विभिन्न देशों में इसकी 150 शाखाएं कार्यरत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कुमारेश मिश्रा, पूर्व वरिष्ठ संयुक्त राष्ट्र एडवाइजर डॉ. मार्कंडेय राय तथा यूनाइटेड नेशन्स एफीलिएटेड इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड पीस के अध्यक्ष डॉ. प्रियारंजन त्रिवेदी द्वारा कुलपति को यह पुरस्कार प्रदान किया गया.

ज्ञातव्य है कि प्रो. नीलिमा गुप्ता का नाम शिक्षा जगत में देश की प्रतिष्ठित महिला नेतृत्वकर्ता के रूप में विख्यात है जिन्होंने चार सरकारी विश्वविद्यालयों में कुलपति के रूप में कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया है। भारत सरकार द्वारा उन्हें मध्य प्रदेश की पहली महिला कर्नल कमांडेंट पद से विभूषित कर सम्मानित किया गया है. बी. डब्ल्यू. एजुकेशन संस्था द्वारा उनका नाम शिक्षा जगत में भारत की 50 प्रभावशाली महिलाओं में सम्मिलित किया गया। उन्हें 80 से ज्यादा राष्ट्रीय, राजकीय तथा अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है जिनमें से 14 महिला पुरस्कार हैं. एनीमल टैक्सोनॉमी के क्षेत्र में उन्हें प्रतिष्ठित ई. के. जानकी अम्मल राष्ट्रीय पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न-राजकीय पुरस्कार भी मिले हैं. वे यूजीसी, डीएसटी, एआईयू, नैक, सीएसटी, यूपी-सीएआर, नीपा, सीईसी जैसे राष्ट्रीय अकादमिक संस्थाओं की समितियों में चेयरमैन/सदस्य हैं.

वे विश्व के पाँच द्वीपों जिनमें अमेरिका, यूके, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ताइवान, मिश्र, जापान, चीन, सिंगापुर, थाइलैंड, फ्रांस, भूटान, श्रीलंका, हांगकांग आदि देशों का भ्रमण कर चुकी हैं। वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोधकर्ता हैं जिन्हें स्टैन्फोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा विश्व के 2 प्रतिशत सर्वोच्च वैज्ञानिकों में सम्मिलित किया गया है। बारह राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं की प्रधान अन्वेशक, गंगा प्रदूषण तथा जीव वर्गीकरण पर उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। आत्मनिर्भर कानपुर, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय ज्ञान परंपरा, महिला सशक्तिकरण, आदि पहलुओं पर योगदान उनका समाज के प्रति लगाव को दर्शाता है।

इस अवसर पर उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि महिलाओं में शांति शिक्षा नेतृत्व को बढ़ाने के लिए कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा, क्षमतायुक्त नेतृत्व वाली महिलाओं को चिन्हित किया जा चाहिए. उन्हें बेहतर नेतृत्व का प्रशिक्षण देकर, जेंडर

समानता एवं सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित कर महिला शांति शिक्षा नेतृत्व को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंनें आश्वासन दिया कि वे डॉ. हरीसिंह गौर विवि, सागर में शांति शिक्षा के पाठ्यक्रम प्रारंभ कर युवाओं को शांति शिक्षा के लिए प्रेरित करेंगी, जिससे आने वाली युवा पीढ़ी शांति शिक्षा के आधार पर विश्व में शांति का प्रचार कर एक सुखद, समृद्ध तथा प्रसन्न समाज बनाने में सफल हो सके। सम्मेलन में उपस्थित सभी अतिथियों ने प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की तथा महिला शांति शिक्षा पुरस्कार हेतु बधाई दी।

नए वर्ष में देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़कर कार्य करने का लें संकल्प- कुलपति

'बुंदेली अनुगूंज' और 'हमाओ सागर' थीम पर केंद्रित कैलेंडर का कुलपति ने किया विमोचन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के नव वर्ष 2025 के वॉल कैलेण्डर एवं टेबल कैलेण्डर का विमोचन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रशासनिक भवन के गौर समिति कक्ष में किया। इस वर्ष वॉल कैलेंडर की थीम 'हमाओ सागर' रखी गई है जिसमें सागर शहर एवं आस-पास के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को दर्शाया गया है. टेबल कैलेंडर की थीम 'बुन्देली अनुगूंज' रखी गई है जिसमें प्रमुख बुन्देली लोक वाद्य यंत्रों के विवरण सहित चित्रों को दर्शाया गया है.

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि बीते वर्ष विश्वविद्यालय ने प्रत्येक आयामों पर कार्य करते हुए प्रगति की है.

हम इक्कीसवीं सदी के एक चौथाई भाग को पूर्ण करते हुए नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं. इस वर्ष भी हम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करें ताकि डॉ. गौर और उनके द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़ने और इसके संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है. इसी को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष के कैलेण्डर की थीम रखी गई है. यह अपने आस-पास के परिवेश, अपनी लोक संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करेगा.

इस अवसर पर प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, कैलेण्डर समिति के अध्यक्ष प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. चंदा बेन, प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. दिवाकर राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. यू.के. पाटिल, प्रो. श्वेता यादव, डॉ. पंकज तिवारी, विताधिकारी कुलदीपक शर्मा, डॉ. एस. पी. गादेवार, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. आर. के. गंगेले, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. बलवंत भदौरिया, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. रजनीश, डॉ. विवेक जायसवाल सहित कई शिक्षक मौजूद थे।

भारत विज्ञान, कला, दर्शन सहित ज्ञान के सभी क्षेत्रों में सदियों से समृद्ध रहा है - विनय सहस्त्रबुद्धे

भारत की पहली महिला अध्यापिका क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की 194 वीं जयंती के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा सावित्री बाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के तहत पांचवां ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया. जिसका विषय "भारतीय ज्ञान परम्परा की सार्वभौमिक प्रासंगिकता" था. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पूर्व संसद सदस्य एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे ने अपने बीज वक्तव्य में देश की

राजनैतिक आजादी के पूर्व एवं पश्चात भारतीय ज्ञान परम्परा की स्थिति एवं उसके मुख्य पक्षों पर प्रकाश डाला. डॉ. सहस्त्रबुद्धे ने बताया कि भारत सदियों से ही ज्ञान, दर्शन, योग, अध्यात्म, चिकित्सा, विज्ञान, गणित, मानविकी एवं समाजविज्ञान, भाषा एवं व्याकरण, शिल्प एवं कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में समृद्ध रहा है. किन्तु आजादी के पूर्व अंग्रेज़ी ताकतों ने उसको सिरे से खारिज/नजरअंदाज करके एक 'मैकाले केन्द्रित शिक्षा प्रणाली' में तब्दील कर दिया. लेकिन वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जैसे महत्वपूर्ण सरकारी नीतिगत प्रयास के जरिये हमारे द्वारा अपनी पुरातन ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने की तरफ बढ़या गया कदम आजादी के अमृत महोत्सव का सही मायने में परिचायक है. क्योंकि यह न केवल अपनी प्राचीन ज्ञान विरासत का गुणगान है बल्कि यह हमें वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार तथा निर्देशित भी करता है. इसलिए पुरातन ज्ञान के आधार पर एवं उसका उपयोग करते हुए नवीन ज्ञान पद्धति को गढ़ा जाना मौजूदा समय की प्राथमिक आवश्यकता है. क्योंकि ऐसा करके ही हम सही अर्थों में अपने 'स्व' की पहचान कर सकेंगे और 'स्व' से जुड़ सकेंगे.

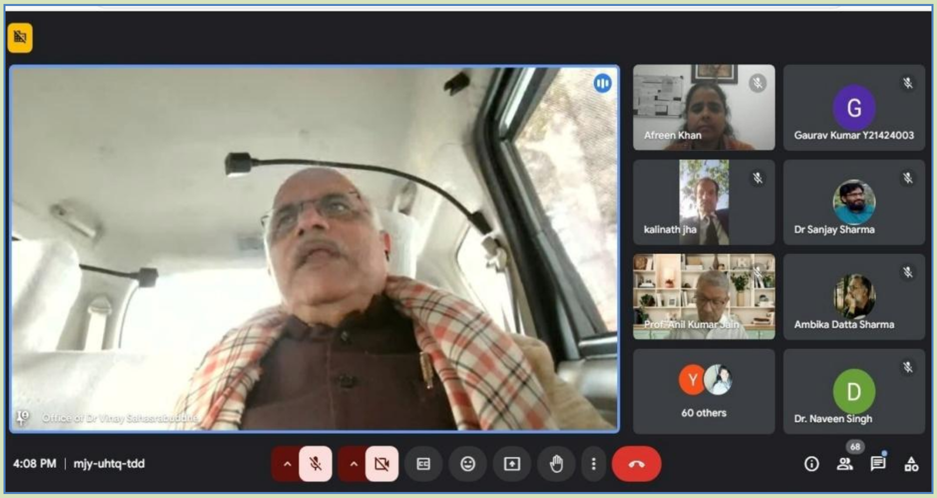

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति प्रो. वाई. एस. ठाकुर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें अपने विद्यार्थियों विशेषकर युवाओं को सीखने-सिखाने की भारतीय पद्धतियों से अवगत कराने के साथ-साथ उसमें तकनीकी का एकीकरण भी करना होगा| यह कार्य न केवल शिक्षक के द्वारा किया जाना चाहिए बल्कि इसमें अभिभावकों एवं समुदाय की भी महत्वपूर्ण भूमिका है.

कार्यक्रम में समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केन्द्र के समन्वयक एवं इस पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. संजय शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

कार्यक्रम की अंतिम बेला में जीवनपर्यंत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिल कुमार जैन ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, शिक्षकों, शोधार्थियों के प्रति औपचारिक आभार ज्ञापित किया. कार्यक्रम में वक्ता परिचय एवं विषय प्रवर्तन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता, प्राच्यविद एवं प्रख्यात दर्शनशास्त्री प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा द्वारा किया गया एवं मंच संचालन टीएलसी वर्किंग कमेटी की सदस्य डॉ. आफरीन खान ने किया.

पर्यावरण संतुलन के लिए जैव विविधता आवश्यक - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राणी शास्त्र विभाग में "विंटर कोलोकियम' के तहत संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की और 'ब्रिजिंग जनरेशन: ग्लिमरिंग लाइफ साइंस' विषय पर अपना उद्बोधन दिया. उन्होंने जैव विविधता के संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति में बहुत सी प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही हैं. हमें लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षित करना चाहिए जिससे पर्यावरण का सन्तुलन बना रहे. उन्होंने बताया कि प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे अत्याधिक निम्न तापमान पर रहने वाले जीवो की शारिरिक क्रियाविधि तथा

अनूकूलन जैसे विषयों पर भी विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चर्चा की जानी चाहिए और जीव संरक्षण एवं उनके उन्नयन पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए. जैव विविधता पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है. वरिष्ठ प्रो. डी. पी.

गुप्ता ने नए शोधों का उल्लेख करते हुआ बताया कि बायोलॉजिकल रिसर्च की आवश्यकता अन्य शोधों से ज्यादा है क्योंकि रोज नए-नए वायरस से समस्त प्राणी प्रभावित हो रहे हैं. हम सभी रोज नए-नए वायरस के वैरिएंट से प्रभावित हो रहे हैं जिसकी रोकथाम के लिए आवश्यक है कि इन विषयों पर ज्यादा शोध हों एवं वायरस को पहचानने और इनसे बचने की नई एवं उन्नत तकनीकें विकसित की जाएँ. फार्मेसी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. यू. के. पाटिल ने जैविक खाद्य पदार्थ के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला. अधिष्ठाता प्रो. वर्षा शर्मा एवं प्राणी शास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव के समन्वयन में इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संयोजक डॉ. मालविका सिकदर एवं सह-संयोजक डॉ. दीपाली जाट थीं. कार्यक्रम में पोस्टर एवं ओरल प्रेजेंटेशन का का प्रदर्शन किया जाएगा.

समाज विज्ञान संकाय में 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन

आदर्श शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होते हैं – प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश के मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता और निर्देशन अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने की. विभिन्न सामाजिक

विज्ञान विषयों में नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों के साथ संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत बैठक संपन्न हुई. सभी सहायक प्राध्यापकों ने अपने अकादमिक एवं विभिन्न कार्यक्षेत्रों वा शोध के बारे में बताया. इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय में पठन-पाठन की गतिविधियों को सुदृढ़ करने, अकादमिक शोध में संलग्न होने संबंधी मार्गदर्शन दिया. उन्होंने कहा कि एन ई पी के अनुसार इंटरडिसिप्लिनरी और मल्टी डिस्प्लिनरी अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिये. इसलिए इस दिशा में समाजविज्ञान के सभी विषयों को एक साथ मिलाकर संगोष्ठी, शोध-कार्य, शोध पत्र इत्यादि की दिशा में कार्य किए जाएंगे. गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने पर जोर दिया जाना चाहिये. शिक्षक विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होते हैं इसलिए एक सफल शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं.

उन्होंने आगामी समय में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं आयोजनों के बारे में भी चर्चा की. कार्यक्रम में डॉ दिव्या भनोट, डॉ संचिता मीणा, डॉ अर्चना, शासना योमसो, डॉ निकिता, डॉ एकता श्रीवास्तव, डॉ प्रवीण, डॉ धनंजय विक्रम, डॉ अखिलेश, डॉ दिवाकर आदि ने सहभागिता की और अपने विचार रखे. धन्यवाद ज्ञापन डॉ दिव्या भनोत ने दिया.

विश्वविद्यालय के कुश्ती खिलाड़ी अभिषेक यादव ने 'खेलो इंडिया' के लिए किया क्वालीफाई

गुरु काशी विश्वविद्यालय भटिंडा के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय कुश्ती (पुरुष) प्रतियोगिता में डॉक्टर हरीसिंह गौर विवि के पहलवान अभिषेक यादव ने 57 किलो वेट कैटेगिरी में 5 विश्वविद्यालयों के पहलवानों को लगातार परास्त कर रेपीचैस राउंड में पहुंचकर जीत अर्जित की. फाइनल मुकाबला में चौथा स्थान प्राप्त करते हुए 'खेलो इंडिया' के लिए क्वालीफाई किया. शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक बी. साठे ने खिलाड़ी एवं कोच को बधाई दी. विभाग के डॉ सुमन पटेल, अनवर ख़ान, विनय शुक्ला, डॉ मनोज जैन, दीपक दुबे, महेंद्र कुमार ने भी पहलवान अभिषेक को बधाई दी.

जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा योग चिकित्सा केंद्र – कुलपति

योग शिक्षा विभाग तथा योग ध्यान केन्द्र डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के द्वारा समाज के लिए निःशुल्क योग आधारित उपचारों और परामर्शों के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए जो यह योग चिकित्सा क्लिनिक स्थापित

किया गया है वह आने वाले समय में बहुत व्यापक स्वरूप में आम जनमानस के जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। उक्त उद्गार विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने योग चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। प्रो. गुप्ता ने आगे कहा कि आज योग के प्रभावों को विश्व ने स्वीकार कर लिया है ऐसे में हमारा दायित्व और ज्यादा बढ जाता है, इसलिए हम प्रयास कर रहे हैं कि अल्प कालिक प्रमाणपत्र तथा आनलाईन पाठ्यक्रम जनसाधारण हेतु प्रारंभ किए जाय।

इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय के प्रशासन विभाग के सहयोग से बी के डॉ. रीना दीदी ने मन प्रबंधन से उत्कृष्ट प्रशासन पर एक प्रायोगिक कार्यशाला सत्र का संचालन किया. डॉ. रीना दीदी ने एकाग्रता के लिए चित्रकार और

खिलाडी का उदाहरण देते हुए मन की स्थिरता की आवश्यकता और महत्व को रेखांकित किया. स्वागत भाषण देते हुए शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने नैतिक चारित्रिक और शैक्षिक प्रगति में योग की भूमिका पर प्रकाश डाला. विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि यह निःशुल्क चिकित्सा केन्द्र सप्ताह में दो दिन सोमवार एवं मंगलवार को दोपहर में संचालित होगा

तथा इसके संदर्भ में प्रायोगिक सत्र सोमवार से शुक्रवार प्रातः 6:30 से 8:00 बजे तक होगा. कार्यक्रम का संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. अरूण साव ने किया. क्लिनिक का संचालन करने वाली डॉ. मीनाक्षी ने बताया कि इसमें योग चिकित्सा सत्र, आयुर्वेद परामर्श, जीवनशैली परामर्श और आध्यात्मिक परामर्श के माध्यम से जीवन को सरल और सुखी बनाने का प्रयास होगा. योग केंद्र से सम्बन्धित जानकारी हेतु विभाग में संपर्क किया जा सकता है.

इस अवसर पर वित्ताधिकारी कुलदीप शर्मा, शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे, महेंद्र बाथम, प्रो राजेंद्र यादव, बी के रिचा दीदी, लक्ष्मी दीदी, दीपिका दीदी, बी के राम भाई, सुनील भाई, राहुल भाई, डॉ ब्रजेश सिंह, डॉ महेंद्र शर्मा, प्रज्ञा साव, मनीष जैन, अनवर खान, प्रवीण राठौर, शंकर पटेल सहित अनेक लोग उपस्थित थे.

हिंदी विभाग में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर व्याख्यान का आयोजन

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'हिंदी बने वैचारिक स्वराज की विश्व चेतस भाषा' विषय पर

व्याख्यान का आयोजन किया गया। आयोजन में मुख्य अतिथि और वक्ता के रूप में प्रख्यात दार्शनिक और चिंतक प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा को आमंत्रित किया गया। अम्बिकादत्त शर्मा ने अपने व्याख्यान में हिंदी के राजनैतिक, सामाजिक और विश्वव्यापी सरोकारों के साथ वैश्विक स्तर पर हो साहित्यिक अनुवाद पर बात रखी। साथ ही उन्होंने भाषा के आत्मसात और तत्सात को व्याख्यायित कर हिंदी के साथ आत्मसात होने की बात की। अम्बिकदत्त शर्मा ने हिंदी में साहित्यिक सर्जना हेतु भी नवीन पथ सुझाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की, विशिष्ट उपस्थिति के रूप में भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रो.चंदा बैन, कार्यक्रम के संयोजक के रूप में डॉ. हिमांशु कुमार उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में हिंदी विभाग के प्रो. राजेंद्र यादव, डॉ. संजय नैनवार, डॉ. अफ़रोज़ बेगम, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ.सुजाता मिश्रा, डॉ. अवधेश कुमार, श्री प्रदीप सौंर, दर्शनशास्त्र के प्रो. अनिल तिवारी, डॉ. अर्चना, डॉ. देबोस्मिता, संस्कृत विभाग से डॉ. शशिकुमार सिंह, डॉ.रामहेत गौतम, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. किरण आर्या, जीवन पर्यन्त शिक्षा विभाग से डॉ. संजय शर्मा तथा हिंदी व अन्य विभागों के शोधार्थी-विद्यार्थी उपस्थित रहे। औपचारिक आभार ज्ञापन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. अरविन्द कुमार ने किया।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका के प्रो. के.सी. पाटीदार का गणित विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के अपने पांच दिवसीय रिसर्च कोलेब्रेटिव को लेकर भारतीय प्रवास पर आए यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका के प्रो. के.सी. पाटीदार जो भारतीय गणित के विशेषज्ञ हैं. वह 20 वर्षों से यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका में गणित विभाग में कार्यरत हैं. 10 जनवरी 2025 को विभाग के रामानुजन व्याख्यान कक्ष में आयोजित विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसमें प्रो. पाटीदार द्वारा 'रोबस्ट स्पेक्ट्रल मेथड्स फॉर प्राइसिंग ऑप्शनस' शीर्षक पर व्याख्यान दिया गया, प्रोफेसर पाटीदार साउथ अफ्रीका रिसर्च फाउंडेशन के C1 श्रेणी के गणितज्ञ हैं, गूगल स्कॉलर पर लगभग 2000 से अधिक उनका साइटेशन है तथा उनके द्वारा प्रकाशित 106 उच्च स्तरीय शोध पत्र प्रकाशित हैं उनके इस शोध प्रवास से विभाग के सभी शिक्षक, शोध छात्र इस विषय में शोध कार्य पर चर्चा कर लाभान्वित हुए. व्याख्यान के प्रारंभ में विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आर.के. गंगेले ने उनका पुष्प गुच्छ देकर स्वागत करते हुए संक्षिप्त परिचय दिया. व्याख्यान के अंत में प्रोफेसर यू.के. खेड़लेकर द्वारा शाल-श्रीफल से सम्मानित किया एवं डॉ. एम.के. यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया व्याख्यान के दौरान विभाग के शिक्षक डॉ. सुधांशु कुमार, डॉ. आर. के. पांडेय, डॉ. शिवानी खरे, डॉ. विपिन कुमार, डॉ. अंकित रूही, डॉ. भूपेंद्र एवं सभी शोध छात्र उपस्थित रहे.

स्थापना दिवस पर विशेष व्याख्यान-

ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक शोध से बेहतर दिशा मिलती है- प्रो शशांक शेखर ठाकुर

समाजशास्त्र विषय देश के विकास और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है - प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश में समाजशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस पर उन्नत भारत अभियान और विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल के समाज शास्त्र एवं समाज कार्य विभाग के प्रोफेसर डॉ. शशांक शेखर ठाकुर ने 'ग्रामीण विकास के लिये

सामाजिक शोध' विषय पर व्याख्यान दिया. डॉ. ठाकुर ने कहा कि क्षेत्र कार्य से मूलभूत बाते सीखने को मिलती हैं. सामाजिक शोध से ग्रामीण विकास की योजनाओं को नयी दिशा मिलती है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि सागर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विषय की स्थापना और विकास की यात्रा गौरवशाली है. प्रो. श्यामाचरण दुबे, प्रो. आई.एस. चौहान, प्रो. एन.के. गौरहा जैसे विश्वविख्यात समाज वैज्ञानिकों ने इस विभाग को शिक्षा और शोध से नयी समृद्धि दी है. इस विभाग ने कुलपति दिये हैं, भारतीय हाई कमिश्नर, कुशल प्रशासक, शिक्षक, अधिकारी, राजनीतिज्ञ, समाजसेवी और श्रेष्ठ नागरिक दिये हैं. प्रो. राजपूत ने कहा कि समाजशास्त्र विभाग विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉक्टर हरीसिंह गौर के सपनों के अनुरूप शोध की दिशा में निरंतर संलग्न रहता है. ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय समृद्धि और संस्कृति संरक्षण की दिशा में भी विभाग क्षेत्र कार्य एवं शोध के माध्यम से निरंतर योगदान दे रहा है. एक भारत श्रेष्ठ भारत और उन्नत भारत की संकल्पना को सार्थक आधार देने के लिये समाजशास्त्र विषय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है.

स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर वृक्षारोपण और विद्यार्थी सम्मान स्टूडेंट ऑफ दि ईयर का भी आयोजन किया गया. छात्र छात्राओं ने अपनी जिज्ञासा रखी, जिसका समाधान विषय विशेषज्ञ ने किया. कार्यक्रम में विभागीय शिक्षक प्रो. काली नाथ झा, डॉ नंदी पटोदिया, डॉ शिब शंकर जेना, डॉ शासना योमसो, डॉ रविदास सहित शोधार्थियों, छात्र-छात्राओं और कर्मचारियों ने सहभागिता की.

समावेशी शिक्षण व्यवस्था ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकती है- प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के दिशा निर्देश पर विश्वविद्यालय में स्थापित सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह प्रकोष्ठ (एस.ई.डी.जी.सेल) की बैठक में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा, लैंगिक समानता, दिव्यांगजन के लिए सुविधायें, कोई गरीबी नहीं, अच्छे कार्य एवं आर्थिक विकास को हासिल करने के लिये तथा सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरो की समानता उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है, साथ ही उन्होंने बैठक में

उपस्थित विभागाध्यक्षों, अधिष्ठाताओं एवं अन्य सदस्यों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का आवाहन करते हुए कहा की समावेशी शिक्षण व्यवस्था ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकती है।

एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने कार्यक्रम के आरम्भ में अतिथियों का स्वागत करने के साथ प्रकोष्ठ के उद्देश्यों एवं प्रकोष्ठ के द्वारा वर्षपर्यंत की जाने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला। शिक्षा विभाग के सहायक प्रध्यापक डॉ.

नवीन सिंह ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं भावी योजनाओं पर पी.पी.टी. के द्वारा प्रस्तुतीकरण दिया। प्रवेश प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. दिवाकर शुक्ला ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रवेश के दौरान दी जाने वाली सुविधाओं एवं उनका डेटा-बेस तैयार करने हेतु योजना प्रस्तुत की जिससे वर्षपर्यंत इन विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित किया जा सके। विश्वविद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिगम संसाधन केन्द्र संचालित है जिसमें ब्रेल मशीन के द्वारा पुस्तकों को ब्रेल लिपि में बदलने की सुविधा प्रदान की जा रही है। दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु सुग्मय पुस्तकालय की सुविधा भी आरम्भ की गई है। विश्वविद्यालय की वेबसाईट दिव्यांग फ्रेन्डली बनाया गया है। इस बैठक में अधिष्ठाता छात्र गतिविधियां, परीक्षा प्रभारी, निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालय आई.टी. प्रभारी, प्रभारी यंत्री विभाग, केन्द्रीय पुस्तकालय अध्यक्ष, छात्रावास वार्डन एवं प्रभारी सांस्कृतिक गतिविधियां ने वर्षपर्यंत दिव्यांग एवं वंचित वर्ग विद्यार्थियों के लिए की जाने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला। बैठक में तैयार किया गया कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रथक से राष्ट्रीय स्तर का युवा महोत्सव आयोजित करने हेतु सामाजिक अधिकारीता न्याय मंत्रालय एवं अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संगठन को विशेष प्रस्ताव भेजा जाएगा तथा क्रीडा आयोजित करने हेतु स्पेशल ओलंपिक भारत को प्रस्ताव भेजा जाएगा। साथ ही दिव्यांग विद्यार्थियों की यू.डी.आई.डी. कार्ड बनाने के लिए विश्वविद्यालय में कैम्प का आयोजन किया जायेगा। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नीपा नई दिल्ली में अधिगम-अक्षम विद्यार्थियों के लिए आयोजित बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा की गई इस विशेष पहल की सराहना की गई तथा विश्वविद्यालय के अधिगम संसाधन केन्द्र को एक देशव्यापी मॉडल केन्द्र के रूप में स्थान मिलने पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त की। बैठक के अंत में प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र में इंडक्टिवली कपल्ड मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय अलग-अलग परिष्कृत उपकरणों पर कार्यशाला आयोजित कर रहा है. इसी संदर्भ में विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र में इंडक्टिवली कपल्ड मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया. उक्त कार्यशाला में मुख्य वक्ता डॉ. विवेक प्रकाश मालवीय एवं प्रो. ए.के. सिंह रहे जिन्होंने आईसीपीएमएस मशीन से हेवी मेटल डिटेक्शन

एवं विभिन्न सैंपल में मैटेलिक कंसंट्रेशन कैसे निकाला जाता है, इस बारे में बताया. कार्यशाला में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों से आए प्रतिभागियों को आईसीपीएमएस मशीन पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण दिया गया. कार्यक्रम की शुरुआत में उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव द्वारा केंद्र के द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बारे में बताया गया एवं विश्वविद्यालय में संचालित होने वाली आगामी कार्यशालाओं के बारे में अवगत कराया गया एवं प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी गईं.

सांस्कृतिक समन्वय और आध्यात्मिक चेतना का पर्व है मकर संक्रांति- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता
मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति एक पवित्र उत्सव के रूप में मनाया जाता है. यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व है. लोग इस अवसर पर एक-दूसरे को संदेशों के माध्यम से बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं लेकिन यह समागम इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि लोग मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दे रहे हैं.

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अलग-अलग क्षेत्रों, भाषाओं एवं संस्कृतियों से जुड़े नव नियुक्त शिक्षकों ने अपनी सेवायें देनी शुरू की है. विभिन्न संस्कृतियों के समागम एवं समन्वय से हम सभी विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों को शिखर तक ले जायेंगे. विश्वविद्यालय में नवागंतुक शिक्षकों के लिए यह आयोजन इस मायने में विशेष है कि एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समागम के जरिये वे सब एक दूसरे से परिचित हो सकेंगे. कुलपति ने सभी को इस अवसर बधाई एवं शुभकामनायें देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है।

कुलाधिपति श्री कन्हैयालाल बेरवाल ने सभी को मकर संक्रांति एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं साथ ही सभी नव नियुक्त

शिक्षकों को बधाई देते हुए डॉक्टर गौर के सपनों को साकार करने और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दीं. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर बनने वाले व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया. कुलाधिपति, कुलपति एवं शिक्षकों ने पतंग उड़ाकर विवि के उच्च शिखर पर पहुँचने का सांकेतिक महत्त्व दर्शाया. इस अवसर पर विश्विद्यालय के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों ने अपना परिचय भी प्रस्तुत किया.

28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित विवि के छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान

इस अवसर पर भोपाल में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित छात्रों को कुलाधिपति एवं कुलपति ने

बधाई दी. इस छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है. गौरतलब है कि इस आयोजन में सम्मिलित छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था और समूह लोकगीत में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया. छात्र समूह में यश गोपाल, गगन राज, साक्षी, संजय, यश पाठक, गोलू, विधान एवं अन्य थे. आयोजन में विश्विद्यालय के शिक्षक प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. एच. थामस, प्रो. संजय जैन, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. अनिल जैन, डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. अरविन्द गौतम, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ हिमांशु, डॉ. राकेश सोनी, सहित कई शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे.

युवाओं की ऊर्जा और क्षमता के रचनात्मक उपयोग से बनेगा विकसित भारत- डॉ. मार्कंडेय राय

भारतीय संस्कृति की एकात्मता का अभिवन केंद्र है विश्वविद्यालय- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी ग्रहण करें, तभी राष्ट्र निर्माण संभव- कुलाधिपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन स्वर्ण जयंती सभागार में किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्लोबल पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कन्हैयालाल बेरवाल एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में यह आयोजन संपन्न हुआ. अतिथियों ने डॉ. गौर और माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया. स्वागत भाषण कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक प्रो. डी. के. नेमा ने दिया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. शालिनी चोइथरानी ने किया. प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय ने आभार ज्ञापन किया.

मुख्य अतिथि डॉ. मार्कंडेय राय ने उद्बोधन देते हुए कहा कि डॉ. गौर के प्रयासों से यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था और आज इसकी कीर्ति पताका देश-विदेश में विद्यमान है. हमारे आध्यात्मिक जीवन में सागर का विशेष महत्त्व है. मुझे विश्वास है कि सागर में स्थापित यह विश्वविद्यालय उच्च शिखर पर पहुंचेगा. उन्होंने कहा कि आज विकसित भारत की बात हो रही है. केवल सरकारी प्रयासों से भारत विकसित नहीं होगा बल्कि इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा. शैक्षिक संस्थान के रूप में विश्वविद्यालय की भूमिका इसमें बहुत बड़ी है. जी-20 समिट में भारत ने बसुधैव कुटुंबकम का नारा दिया. दुनिया के ज्यादातर देश बसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन पर विश्वास नहीं करते थे लेकिन यह भारत की ताकत है कि उसने पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में समझने के सिद्धांत पर सोचने को विवश किया. उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने बहुत पहले ही ग्लोबल इथिक्स की बात की थी. दलाई लामा जैसे आध्यात्मिक गुरु ने अपना जीवन समस्त धर्मों-संस्कृतियों से परे जाकर मानवता जैसे मूल्यों के प्रति समर्पित किया. यह मूल्य इस बात पर आधारित है कि हम दूसरों का सम्मान करना सीखें. उन्होंने कहा कि भारत सबसे युवा आबादी वाला देश है. हम सबका यह कर्तव्य है कि हम अपने युवाओं को मौका दें, उन्हें आगे लायें, उन्हें शांति दूत के रूप में प्रशिक्षित करें. युवाओं की ऊर्जा और क्षमता के रचनात्मक उपयोग से स्वस्थ और सुंदर वातावरण निर्मित होगा और भारत पूरी दुनिया से आगे जाकर नेतृत्वकारी स्थिति में होगा. जब-जब मानवीय अस्तित्व पर संकट आया, तब तब भारत ने ही पूरी दुनिया को रास्ता दिखाया. कोरोना जैसी महामारी इसका सबसे अच्छा उदहारण है. शिक्षक रोल मॉडल होते हैं. सभी शिक्षकों का दायित्व है कि वे अपने विद्यार्थियों को मूल्य आधारित शिक्षा दें, उनके चरित्र का निर्माण करें, उन्हें एक

अच्छा मनुष्य बनाएं ताकि विद्यार्थी एक अच्छे वैश्विक नागरिक के रूप में पूरी दुनिया के लिए कार्य कर सकें. उन्होंने समुद्र मंथन के उदाहरण के माध्यम से ब्ल्यू इकॉनमी जैसे विषयों के अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित किया.

भारतीय संस्कृति की एकात्मता का अभिवन केंद्र है विश्वविद्यालय- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हम सभी प्रतिदिन डॉ. गौर को नमन करते हुए अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं. यह डॉ. गौर के आशीर्वाद का ही परिणाम है कि विश्वविद्यालय लगातार नए-नए प्रयोग करते हुए नवाचार कर रहा है. उन्होंने कहा कि आज विवि में 15 से अधिक राज्यों के शिक्षक कार्य कर रहे हैं और 25 राज्यों के विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं. यह भारतीय संस्कृति की एकात्मता का अभिनव उदाहरण है. विवि में नवनियुक्त शिक्षक देश-विदेश से शिक्षण और अनुभव प्राप्त हैं. हमारे विवि ने डिजिटल डिग्री, अग्निवीरों के लिए पाठ्यक्रम शुरू करने, निःशक्त विद्यार्थियों के लिए संसाधन एवं सुविधा केंद्र बनाने, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय भाषा के प्रोत्साहन, समावेशी शिक्षा, जेंडर संवेदनशीलता जैसे क्षेत्रों में अग्रणी है. उन्होंने कहा कि विकसित भारत बनाने में महिला नेतृत्व और महिला सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है. प्रत्येक व्यक्ति में प्रतिभा होती है. महिलाओं की क्षमता को बढ़ने के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है और उन्हें भागीदारी के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है. हम सभी डॉ. गौर के दूत हैं. हमें उनके विचारों, सपनों के अनुरूप कार्य करते हुए इस विश्वविद्यालय को और आगे ले जाना है.

विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी ग्रहण करें, तभी राष्ट्र निर्माण संभव- कुलाधिपति

कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने सभी को मकर संक्रांति और केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि डॉ. गौर द्वारा स्थापित शिक्षा के इस मंदिर में सभी उनकी भावनाओं और विचारों के अनुरूप कार्य करें. उनके अथक प्रयासों से स्थापित इस विवि से पढ़कर बहुत से छात्रों ने देश-विदेश में नाम रोशन किया है और आज भी कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि आज शिक्षा के साथ संस्कारों की भी आवश्यकता है. विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों की शिक्षा देकर उन्हें संस्कार देना भी आवश्यक है. उन्होंने विश्वविद्यालय में किये जा रहे नवाचारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन प्रयासों से समाज को बहुत लाभ मिलेगा. विवि कौशल युक्त शिक्षा की दिशा में प्रयास कर रहा है. देश को विकसित बनाने की दिशा में विश्वविद्यालय अग्रणी रहेगा, युवाओं को सही दिशा मिले, विद्यार्थी चरित्रवान बनें मेरी ऐसी कामना है.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संपादित पुस्तक 'प्रज्ज्वलित दीपशिखा' का विमोचन

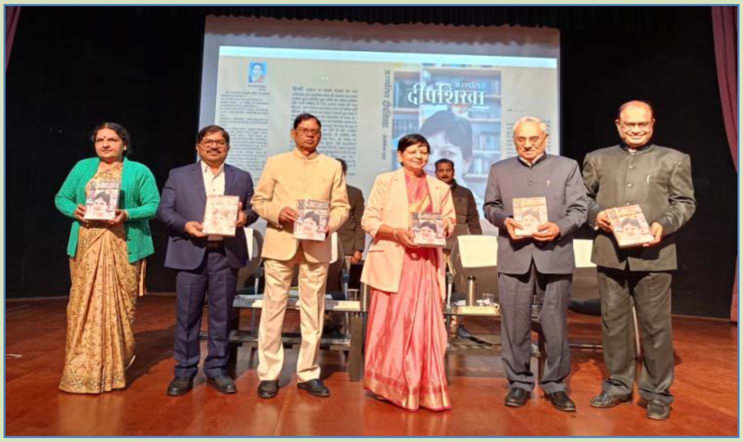

विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संपादित पुस्तक 'प्रज्ज्वलित दीपशिखा: प्रो. नीलिमा गुप्ता' का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया. यह पुस्तक विवि के हिंदी विभाग की अतिथि प्राध्यापक डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय द्वारा संपादित की गई है. इस अवसर पर संपादक ने पुस्तक लिखे जाने की पूरी प्रक्रिया, अपने अनुभव और पुस्तक की सामग्री के बारे में परिचय दिया.

'वसुधैव कुटुंबकम' पुस्तक का अतिथियों ने किया विमोचन

ग्लोबल पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय और प्रो. सुरेन्द्र पाठक द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया.

विश्वविद्यालय में स्थापित होगा शांति केंद्र, ग्लोबल पीस फाउंडेशन के साथ हुआ एमओयू

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं ग्लोबल पीस फाउंडेशन के साथ अकादमिक एवं शैक्षणिक समझौता संपन्न हुआ. समझौता पत्रक पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं डॉ. मार्कंडेय राय ने हस्ताक्षर किये. इसके तहत फाउंडेशन द्वारा पीस लीडर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अन्य अकादमिक गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी. इस अवसर पर कुलपति ने घोषणा की कि विश्वविद्यालय में एक शांति केंद्र की शुरुआत की जायेगी.

ईएमएमआरसी द्वारा निर्मित डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन, अतिथियों ने यूट्यूब चैनल 'गौर-प्लस' किया लांच

केंद्रीय विश्वविद्यालय बनने के पंद्रह वर्ष की यात्रा पर आधारित विश्वविद्यालय के ईएमएमआरसी द्वारा निर्मित वृत्त चित्र का प्रदर्शन किया गया जिसमें विवि की अधोसंरचना निर्माण से लेकर उपलब्धियों एवं अकादमिक यात्रा को दर्शाया गया है. इस अवसर पर केंद्र द्वारा निर्मित यूट्यूब चैनल 'गौर प्लस' भी लांच किया गया. केंद्र के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने बताया कि इस चैनल में विद्यार्थियों के पठन-पाठन की बहुत सी सामग्री, वृत्त चित्र, रूचि पूर्ण, मनोरंजक एवं ज्ञानप्रद सामग्री निःशुल्क उपलब्ध रहेगी.

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने दिया विविधता में एकता का संदेश

विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के निर्देशन में छात्र-छात्राओं ने भारत की सांस्कृतिक विविधतापूर्ण नृत्यों के माध्यम से विविधता में एकता का संदेश दिया. छात्र-छात्राओं ने महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब सहित कई राज्यों के नृत्य का प्रदर्शन किया.

प्रसिद्ध बुंदेली लोकनृत्य बधाई की भी प्रस्तुति हुई. आयोजन में विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रो. संजय जैन, प्रो. पी. के. कठल, प्रो. ए. पी. त्रिपाठी, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. अनिल जैन, प्रो चंदा बेन, प्रो राजेंद्र यादव, डॉ. एस पी गादेवार, डॉ. अनिल तिवारी, डॉ ऋतू यादव, डॉ. अलीम खान, प्रो. श्रीभागवत, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. दीपंशी, डॉ. सोनल, डॉ. नवीन, डॉ मीनाक्षी, डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. राकेश सोनी सहित कई शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे.

गौर समाधि पर अतिथियों ने दी पुष्पांजलि

केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह की शुरुआत से पूर्व सभी अतिथियों ने गौर समाधि स्थल पहुँचकर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. गौर को पुष्प अर्पित कर नमन किया.

पुरातत्व संग्रहालय के विस्तारित भवन निर्माण हेतु कार्य आरम्भ

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के म्यूजियम डिवीजन द्वारा अनुदान प्राप्त होने के बाद प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में पूर्व से स्थापित पुरातत्व संग्रहालय के विस्तारित भवन के निर्माण हेतु कार्य आरम्भ किया गया. विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप अनुष्ठान के साथ ईंट रखकर भवन निर्माण की आधार शिला रखी. इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे, प्रो. डी. के. नेमा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय, प्रो. चन्दा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, विभागीय शिक्षक, शोधार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे.

शांति, सहयोग एवं समन्वय की भारतीय दृष्टि से ही वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार होगी

डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर और ग्लोबल पीस फाउंडेशन इंडिया के बीच विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गये. इस साझेदारी का उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शांति निर्माण और नेतृत्व विकास जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान और प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है. समझौते पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और जीपीएफ इंडिया के चेयरपर्सन डॉ. मार्कंडेय राय ने हस्ताक्षर किए. इसके

साथ ही 'शांति और नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम' का शुभारंभ भी किया गया, जो 15 और 16 जनवरी 2025 तक आयोजित हुआ. इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को शांति निर्माण और नेतृत्व कौशल में प्रशिक्षित करना है.

कार्यक्रम के दौरान डॉ. मार्कंडेय राय (जीपीएफ इंडिया, चेयरपर्सन) ने युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए शांति निर्माण के महत्व पर चर्चा की. उन्होंने कहा कि भारत ने हमेशा पूरी दुनिया को दिशा प्रदान की है. मानवीय संकट के समय विश्व हमेशा भारत की तरफ देखता है. भारत की युवा आबादी क्षमता से परिपूर्ण है और उसे आगे बढकर नेतृत्वकारी भूमिका में होना चाहिए. उन्होंने कहा कि भारत शांतिप्रिय देश है और भारतीय दार्शनिकों, विचारकों और चिंतकों ने हमेशा पूरे विश्व में शान्ति का ही सन्देश दिया. उन्होंने कहा कि शांति, सहयोग एवं समन्वय की भारतीय दृष्टि से ही वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार होगी.

डॉ. सुरेंद्र पाठक (वरिष्ठ शिक्षाविद) ने नेतृत्व विकास के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया. कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों में शांति निर्माण के मूल सिद्धांतों पर चर्चा, नेतृत्व विकास और सामुदायिक सहयोग आदि पर चर्चा रही. दूसरे दिन का सत्र इंटरएक्टिव सेशन था जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और दिए गए विषय पर अपने सकारात्मक विचार रखे. प्रो. वंदना सोनी (कार्यक्रम समन्वयक) ने कार्यक्रम के सुचारू संचालन और समन्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया. सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किये गये.

कम्युनिटी कॉलेज को मिलेगा नया स्वरुप, उत्पादों के प्रदर्शन एवं बिक्री के लिये होगा कांउटर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्युनिटी कॉलेज के भवन का उद्घाटन कुलाधिपति के.एल. बेरबाल, जीपीएफ के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ.

कुलाधिपति ने कहा कि कम्युनिटी कॉलेज बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्वरोजगार को बढावा दे रहा है. उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कौशल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे विधार्थी शिक्षा के साथ हुनरमंद बने. इस मौके पर डॉ. मार्कंडेय राय ने फैशन वर्कशॉप में विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोडक्ट देखे तथा विद्यार्थियों के कार्य की सराहना की. कम्युनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी प्रो. एस.के. काशव ने बताया कि कम्युनिटी कॉलेज द्वारा वर्तमान में स्किल डेवलपमेंट के 19 कोर्स संचालित हो रहे हैं. वर्तमान में कॉलेज के पास लगभग 550 से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश है. उन्होंने अतिथियों को कम्युनिटी कॉलेज के उत्कृष्ट कार्यों एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि नवआवंटित भवन में कम्युनिटी कॉलेज को नया स्वरूप देने का कार्य किया जायेगा. फैशन डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिये अत्याधुनिक सिलाई मशीन वर्कशॉप तैयार की जायेगी. इस परिसर में एक कॉमन कांउटर तैयार किया जायेगा जिसमें फैशन मशरूम, फूड प्रोसेसिंग, वर्मीकम्पोटिंग इत्यादि के कोर्स के विद्यार्थी स्वयं के द्वारा तैयार प्रोडक्ट जैसे डिजाईनर लेहंगा, सूट, साड़ी, हैंडीक्राफ्ट, शो सजावट सहित मशरूम, फूड प्रोडक्ट में अचार, जैली, हनी प्रोडक्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट खाद सहित अन्य सामग्री रखी जायेगी. प्रोडक्ट बिक्री के बाद राशि विधार्थियों के खाते में जायेगी. कॉमन कांउटर सुविधा विश्वविद्यालय के समस्त विभाग के विद्यार्थियों के लिये रहेगा. विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का मौका दिया जायेगा. इस मौके पर कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. चंदाबेन, प्रो. भागवत, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. शालिनी, डॉ. जी.के. तिवारी, डॉ. किरण आर्य, डॉ. बबीता यादव, डॉ. सुप्रभा दास, प्रो. रत्नेश दास, डॉ. गौतम प्रसाद, प्रवीण राठौर सहित कार्यालय सहायक, निशांक शर्मा, अनुराग बृजपुरिया, बसंत माझी, राकेश अहिरवार, विपिन बाल्मिकी मौजूद रहे.

स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपने स्वाभिमान की तरह जीवन में उतारना चाहिए

विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में युवा दिवस का आयोजन

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में स्वामी विवेकानन्द जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अर्चना वर्मा ने कार्यक्रम में शामिल सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की संरचना का विवरण प्रस्तुत किया. उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के विचारों को आत्मसात करने और उन्हें अपने चरित्र का हिस्सा बनाने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया. विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने सभी आगंतुको को युवा दिवस की बधाई दी एवं अपने विचार प्रस्तुत किए. उन्होंने विवेकानन्द के विचारों में आध्यात्म और समाज के समन्वय पर बल दिया.

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सेन्टर फॉर फिलॉसफी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. ए. नटराजू, ने स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों और मूल ग्रन्थों के अध्ययन की महत्ता पर चर्चा की. उन्होंने सभी को विवेकानन्द के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया. कार्यक्रम के दौरान अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने 'आत्मनं सिद्धि' के रूप में भारतीय ज्ञान-परम्परा की विशिष्टता को उजागर करते हुए अन्य अंतरराष्ट्रीय परम्पराओं से इसकी श्रेष्ठता को विवेचित किया. प्रो. शर्मा ने कहा कि हमें स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपने स्वाभिमान की तरह जीवन में उतारना चाहिए. धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सहसंयोजक डॉ. देवस्मिता चक्रवर्ती ने स्वामी विवेकानन्द के नारी सशक्तिकरण के दृष्टिकोण पर चर्चा की. भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक दर्शनशास्त्र विभाग के डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध, डॉ. अर्चना वर्मा एवं डॉ. देवस्मिता चक्रवर्ती थे. इस अवसर पर विभाग में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया. प्रथम स्थान पर अथर्व मिश्रा, वैष्णवी राठौर, मुस्कान कौरव, द्वितीय स्थान आलोकदेव पाण्डेय, तृतीय स्थान पर सौम्या शर्मा, प्रियांशी राठौर एवं अमित तिवारी रहे. कार्यक्रम संचालन दर्शनशास्त्र विभाग के शोधार्थी अक्षरा सिंघई, विभा पाण्डेय, शिव कुमार यादव एवं गौरव कुमार द्वारा किया गया. कार्यक्रम में राजनीति एवं लोकप्रशासन विभाग से डॉ. दिवाकर कुमार झा एवं डॉ. निकिता जायसवाल शामिल हुए.

स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीया कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 16 जनवरी 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 28 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. पुष्पल घोष (प्रभारी शिक्षक, एसईएम) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में एसईएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी.

हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी, सीएआर द्वारा एसईएम उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से नमूना तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने नमूना तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा एसईएम पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के श्री रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार और श्री अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

दर्शनशास्त्र विभाग में 'वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में 'वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का संचालन दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने किया. इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. मार्कंडेय राय, कुलाधिपति, इन्दिरा गाँधी टेक्नोलॉजिकल एण्ड मेडिकल साइन्सेज विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश रहे. डॉ. राय ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न संस्कृतियों में इसकी

विद्यमानता बतायी. विशेष अतिथि डॉ. सुरेन्द्र पाठक, वसुधैव कुटुम्बकम् पुस्तक के सलाहकार और प्रधान अन्वेषक ने 'वसुधैव कुटुम्बकम् : द वे फॉरवर्ड फॉर ग्लोबल पीस' पुस्तक की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला. धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने किया. इस आयोजन में दर्शनशास्त्र विभाग एवं अन्य विभागों के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी शामिल हुए.

सीबीसीएस परीक्षा केन्द्रों का कुलपति ने किया निरीक्षण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, में सत्र 2024-25 की सीबीसीएस यूजी एवं पीजी की परीक्षाएं आयोजित की जा रही है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने परिसर में बनाए गए केन्द्रों महर्षि कणाद भवन एवं आचार्य शंकर भवन का निरीक्षण किया. उन्होंने परीक्षा केन्द्रो पर पहुँचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और सुविधाओं का जायजा लिया. दोनों केन्द्रों पर विभिन्न विषयों की परीक्षाएं आयोजित की जा रही हैं. निरीक्षण के दौरान परीक्षा समन्वयक प्रो. रणवीर सिंह, प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस. पी. गादेवार एवं समस्त शिक्षक समन्वयक मौजूद रहे.

आज की स्त्री किचन से कलम तक की यात्रा में नए आयाम रच रही है - डॉ. शरद सिंह

हिन्दी विभाग में 'स्त्री लेखन: चुनौतियां एवं भविष्य' विषय पर व्याख्यान तथा कथा संवाद का आयोजन

विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 'स्त्री लेखन: चुनौतियां एवं भविष्य' विषय पर व्याख्यान तथा कथा संवाद आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में देश की प्रतिष्ठित हिंदी कथाकार, पर्यावरणविद् और आलोचक सुश्री डॉ. शरद सिंह

उपस्थित थीं. कार्यक्रम का आरम्भ मां सरस्वती व डॉक्टर गौर के माल्यार्पण व सरस्वती वंदना के साथ हुआ. स्वागत वक्तव्य प्रो. राजेंद्र यादव द्वारा दिया गया जिसमें उन्होंने सागर के साहित्यकारों को याद किया. डॉ. संजय नाइनवाड़ द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय दिया गया. अपने व्याख्यान के दौरान डॉ. शरद सिंह ने स्त्री की चुनौतियों के बारे में कई बिंदुओं पर चर्चा की. उन्होंने कहा कि किसी भी स्त्री की किचन से कलम तक की यात्रा चुनौती भरी रहती है. इसी सन्दर्भ में उन्होंने अपनी माता से मिलने वाली प्रेरणाओं का भी उल्लेख किया. स्त्री-लेखन में सामने उपस्थित होने वाली प्रमुख समस्याओं को उद्धृत करते हुए उन्होंने पारिवारिक समस्याओं को बहुत गहरे अर्थ से रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि स्त्री को स्त्री लेखिका के रूप में देखा जाए न कि केवल स्त्री के रूप में. भाषाई लिंगबोध के भेदभाव का भी उन्होंने जिक्र किया. अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने कहा कि समग्रता, समर्पण और विषय का पूरा ज्ञान साहित्य लेखन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. उसके पश्चात उन्होंने 'दमयंती आज भी उदास है' नामक कहानी का पाठ किया.

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भाषा अध्ययनशाला की डीन प्रो. चंदा बैन ने अपने वक्तव्य में बुंदेलखण्ड के साहित्य के साथ-हिन्दी में राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त द्वारा लिखित साहित्य पर बात की. कार्यक्रम में बतौर अध्यक्ष उपस्थित हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी में चल रहे स्त्री लेखन और स्वानुभुति व परानुभूति पर बात रखी. कार्यक्रम का संयोजन व संचालन डॉ. हिमांशु कुमार ने किया. औपचारिक आभार डॉ. अरविन्द कुमार ने दिया.

कार्यक्रम में हिंदी विभाग के शिक्षक डॉ. अफ़रोज़ बेगम, डॉ.अवधेश कुमार, डॉ.लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ. सुजाता मिश्र, श्री प्रदीप सौंर, इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे, संस्कृत विभाग से डॉ. शशिकुमार सिंह, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. किरण आर्या, भाषा विज्ञान विभाग से डॉ. बबलू रे, डॉ. अरविन्द गौतम, ईएमआरसी से माधव चंद्र तथा सागर शहर से श्री गजाधर सागर, श्री टीकाराम त्रिपाठी, डॉ. श्याम मनोहर सिरोठिया जैसे विद्वतजन उपस्थित थे. हिंदी और संस्कृत विभाग के गोविंद सिंह, सृष्टि सिंह, सूर्यकांत प्रजापति, अंकित भारद्वाज, शुभांगी ओखदे, प्रतिभा, संजय श्यामले, धर्मेन्द्र शुक्ल और केशव जायसवाल इत्यादि शोधार्थी-विद्यार्थी कार्यक्रम में उपस्थित रहे.

फार्मास्युटिकल साइंस विभाग के प्रियांशु नेमा और शिफा खान को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मान

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के फार्मास्युटिकल साइंस विभाग के शोधार्थी प्रियांशु नेमा और एम.फार्मा की छात्रा शिफा खान ने अपने उत्कृष्ट शोध कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है.

शोधार्थी प्रियांशु नेमा को 20-21 दिसंबर 2024 को विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में आयोजित एपीपी 13वीं वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ शोधार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. यह पुरस्कार उन्हें उनके शोध कार्य 'पायरिमिडीन डेरिवेटिव्स पर व्यापक संगणकीय अध्ययन: जीपीआर119 एगोनिस्ट के रूप में एनआईडीडीएम के खिलाफ यौगिकों के विकास के लिए' प्रदान किया गया. प्रियांशु नेमा, देवरी, सागर (म.प्र.) के निवासी हैं.

इसी सम्मेलन में एम.फार्मा की छात्रा शिफा खान को उनके शोध कार्य 'थायोसेमिकारबाज़ोन इंडोल डेरिवेटिव्स पर व्यापक संगणकीय अध्ययन: कैंसर-रोधी यौगिकों के रूप में' के लिए सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया. दोनों विद्यार्थी मेडिसिनल कैमिस्ट्री में प्रो. सुशील कुमार काशव के मार्गदर्शन में शोध कर रहे हैं.

यह कार्यक्रम एपीपी मध्य प्रदेश राज्य शाखा और एपीपी ऑस्ट्रेलियन अंतरराष्ट्रीय शाखा के सहयोग से एपीपी मॉलफार्म डिवीजन और विजया इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज फॉर विमेन, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) के सहयोग में संपन्न हुआ. छात्रों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलाधिपति श्री के.एल. बेरवाल (आई.पी.एस.) और डॉ. मार्कंडेय राय (चेयरमैन, ग्लोबल पीस फाउंडेशन, इंडिया), विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश कुमार पाटिल, सभी शिक्षकों, माता-पिता और भाई ने शुभकामनाएँ प्रेषित की.

दर्शनशास्त्र विभाग में शोध-पत्र लेखन कार्यशाला का आयोजन

दर्शनशास्त्र विभाग ने 13 से 17 जनवरी 2025 तक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन शाला के शोधार्थियों के लिए एक शोध-पत्र लेखन कार्यशाला का आयोजन किया. डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने इस कार्यशाला के सत्र लिये. इन सत्रों के विषय रहे: शोध-पत्र का शीर्षक कैसे निर्धारित करें, शोध-पत्र का सारांश कैसे तैयार किया जाए, शोध-पत्र की रूपरेखा कैसे तैयार की जाए, शोध की रिपोर्टिंग के लिए कंप्यूटर का कुशलतापूर्वक उपयोग कैसे करें, सन्दर्भों और पुस्तक सूची को कैसे उद्धृत किया जाए. सत्र प्रतिदिन अपराह्न 03:00-04:30 बजे तक आयोजित किए गए. कार्यशाला में दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, इतिहास, पत्रकारिता, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत एवं अन्य विभागों के 45 शोधार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

सार्थक शोध के लिए समय प्रबंधन, जिज्ञासा और समर्पित प्रयास जरूरी

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय में सत्र 2023-24 के नवप्रवेशित शोधार्थियों के लिए संवाद श्रंखला का आयोजन किया गया. संवाद श्रंखला में संकाय अध्यक्ष प्रो दिवाकर सिंह राजपूत ने शोधार्थियों को

शोध संबंधी नियमावली एवं बारीकियों की जानकारी देते हुए कहा कि एक अच्छे शोधकर्ता को सदैव सजग और समय का पाबंद रहना चाहिए. अधिष्ठाता प्रो राजपूत ने कहा कि विषय की प्रकृति और संस्थान के मूल्यों को पहचान कर अकादमिक श्रेष्ठता के लिए आगे बढ़ने की चाह रखने वालों को सफलता जरूर मिलती है. प्रो राजपूत ने कहा कि संवाद से शोध की बारीकियों को समझने में आसानी होती है. सार्थक शोध के लिए समुचित समय प्रबंधन, रचनाधर्मी जिज्ञासा और ईमानदार समर्पित प्रयास बेहद महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं.

कार्यक्रम में शोधार्थियों ने अपनी जिज्ञासाएं रखीं. इस आयोजन में समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास के शोधार्थियों ने सहभागिता की. शोधार्थी प्रावीण्या श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया.

पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 22 जनवरी 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन फार्मास्युटिकल विभाग में किया गया, जिसमें कुल 24 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से

भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. वन्दना सोनी (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी. डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी गई.

हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा पार्टिकल साइज़ एनालाइजर उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया.

सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 04 समूहों में विभाजित किया गया. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. प्रतिभागियों द्वारा पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के श्री रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार और श्री अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

परंपरा और आधुनिकता के सामंजस्य के बड़े शायर हैं अशोक मिज़ाज - डॉ.नुसरत मेहदी

डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के साहित्य परिषद, हिंदी विभाग द्वारा सागर शहर के ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध शायर अशोक मिजाज की चुनिंदा शायरी पर आज दिनांक 23 जनवरी 2025 को व्यापक परिचर्चा और काव्य पाठ का सफल आयोजन

किया गया। इस खास मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल की निदेशक डॉक्टर नुसरत मेहदी उपस्थित रहीं, जिन्होंने अशोक मिजाज की शायरी को परंपरा और आधुनिकता के सामंजस्य के रूप में रेखांकित किया। इसके पश्चात उन्होंने उर्दू की शायरी परंपरा से परिचित कराकर काव्य पाठ भी किया। अपने कलाम में उन्होंने कहा कि 'मैं अंधेरों में काम आऊंगा, मुझको पहचान लो नजर है तो।'

इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता शायर व कवि आदर्श दुबे उपस्थित रहे, जिन्होंने 'आज का मिजाज' विषय पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आज का मिजाज कच्ची नींद के ख्वाब जैसा है। आगे उन्होंने कहा कि अशोक मिजाज जी ने उर्दू और हिंदी को जोड़ देने का मिसाली काम किया है। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉक्टर सुजाता मिश्र उपस्थित रहीं, जिन्होंने कहा कि शायरी की खूबी है कि वह ईमानदारी से कही गई बात है और उन्होंने अशोक मिजाज को हिंदी गजल परंपरा का अग्रणी शायर कहा। इस खास मौके पर अशोक मिजाज स्वयं उपस्थित रहे जिन्होंने अपनी लोकप्रिय गजलों और शेरो-शायरी के माध्यम से कार्यक्रम में समा बांधा। अपनी गजलों और शेरों के माध्यम से आज के मिजाज को देखते हुए उन्होंने कहा कि 'सुलखती भीड़ जब बगावत पर उतर आए, कौन कहता है कि तख्ता पलट नहीं सकता'।

स्वागत वक्तव्य डॉक्टर संजय नाइनवाड द्वारा दिया गया, जिन्होंने कहा कि छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्येतर गतिविधियां बहुत आवश्यक हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दिया और संरक्षक के रूप में प्रोफेसर चंदा बेन उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन-संयोजन डॉक्टर हिमांशु कुमार ने किया और इस खास मौके पर गजाधर सागर, पीआर मलैया जी, मानिक देव ठाकुर, महबूब ताज,

वीरेंद्र प्रधान, टीकाराम त्रिपाठी, अरुण दुबे, अरविंद कुमार, अफरोज बेगम, शशि सिंह, माधव चंद्रा, राजकुमार तिवारी और प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से सुमन और नम्रता जी तथा हिंदी, संस्कृत विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए शिक्षा का उपयोग करें विद्यार्थी- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के गौर प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस धूमधाम से उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान हुआ और

कुलपति ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने राष्ट्रीय-पर्व गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुए कहा कि 26 जनवरी का दिन हमारे लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है। इसी दिन हमारे देश ने एक राष्ट्र के रूप में अपने महान संविधान को अंगीकार कर उन्नत भविष्य की आधारशिला रखी थी और इसी संविधान ने हमें एक आजाद एवं सम्प्रभु राष्ट्र के सम्मानित नागरिक होने का अधिकार और गरिमा प्रदान की है। हम आज के दिन को लोकतांत्रिक आदर्शों के महापर्व के रूप में देखते और मनाते आये हैं। मैं उन महान विभूतियों को नमन करती हूँ, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और जिन्होंने इस देश को एक लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक और समतामूलक राष्ट्र बनाने के लिए संविधान का निर्माण किया।

उन्होंने कहा कि हमारा संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, यह हमारे देश के मूल्यों, सिद्धांतों, और आदर्शों का प्रतिबिंब है। यह हमें समानता, स्वतंत्रता, और न्याय के सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा देता है। संविधान के सार्वभौमिक आलोक में आज हमारा देश चुतर्दिक प्रगति कर रहा है। आज का भारत आत्मनिर्भर बनने की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारा देश वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति को सशक्त कर रहा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हमारी शिक्षा और शोध का योगदान हो.

हम इस मायने में सौभाग्यशाली हैं कि हम एक ऐसे शैक्षणिक संस्थान के जुड़े हैं जिसके संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर स्वयं संविधान-सभा के सम्मानित सदस्य थे। हमारा विश्वविद्यालय गौर साहब जैसे पुरोधा के शैक्षिक संकल्पों की जीवित अग्निशिखा है। यह हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं है, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए योगदान देना है। डॉ. गौर ने अपने जीवन में शिक्षा को एक सामाजिक सुधार के साधन के रूप में देखा। उनका यह दृष्टिकोण आज भी हमारे लिए प्रेरणादायक है। हम सभी को उनके विचारों का अनुसरण करते हुए, शिक्षा को देश के विकास के लिए उपयोग करना चाहिए।

उन्होंने विश्वविद्यालय में हो रहे अकादमिक नवाचारों और उपलब्धियों को साझा करते हुए कहा कि हमारा विश्वविद्यालय अपने अकादमिक गौरव में निरन्तर श्रीवृद्धि कर रहा है और हम एक श्रेष्ठतम शैक्षिक संस्थान के रूप में अपनी अभिनव उपस्थति दर्ज करा रहे हैं। आज हमारा विश्वविद्यालय बड़े स्तर पर शैक्षिक नवाचार, प्रशासनिक दक्षता एवं अकादमिक दृढ़ता के साथ कार्य कर रहा है। पारम्परिक ज्ञान, भारतीय-बोध के साथ ही विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हम वैश्विक स्तर की तकनीकी से सक्षम, संवेदनशील और चेतनावान नागरिक निर्मित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के शोधार्थियों एवं शिक्षकों के श्रेष्ठ प्रकाशनों और अकादमिक सम्मानों के साथ विश्वविद्यालय की अकादमिक गरिमा राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित की जा रही है।

उन्होंने कहा कि 26 जनवरी कैलेण्डर का एक दिन मात्र नहीं है, यह हमारे राष्ट्र के सनातन जागरण का दिन है। यह हमारे संविधान की सम्प्रभु सम्पन्नता का दिन है। इसलिए मैं विशेष तौर पर अपने विद्यार्थियों से कहना चाहती हूँ कि आप सभी इस

राष्ट्र का भविष्य हैं। आपका ज्ञान, आपकी सोच, और आपके प्रयास ही इस देश की दिशा और दशा तय करेंगे। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में, आपको अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने की आवश्यकता है। आपको अपने अधिकारों का उपयोग करना है, लेकिन इसके साथ-साथ अपने कर्तव्यों का पालन भी पूरी निष्ठा से करना है। आज, जब हमारा देश आत्मनिर्भर भारत की दिशा में अग्रसर हो रहा है, तब आपकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा के साथ-साथ, आपको नैतिक मूल्यों और अनुशासन का भी पालन करना होगा। जब आप शिक्षा को समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए उपयोग करेंगे, तभी आपका ज्ञान सार्थक होगा। समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

गौर भवन में भी हुआ ध्वजारोहण, एनसीसी कैडेट्स ने दी सलामी

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर भवन में भी ध्वजारोहण किया। एनसीसी कैडेट्स ने कुलपति को सलामी दी।

विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए देशभक्ति गीत

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने देश भक्ति आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अवधेश तोमर, डॉ. राहुल स्वर्णकार एवं सांस्कृतिक समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने किया।

व्यवहारिक भूविज्ञान विभाग में प्रो. डब्ल्यू.डी. वेस्ट का जन्म दिवस मनाया गया

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के व्यवहारिक भूविज्ञान विभाग द्वारा प्रो. डब्ल्यू.डी. वेस्ट का 124वॉ जन्म दिवस बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. प्रो. वेस्ट ने सन् 1956 में इस विभाग की स्थापना की इससे पूर्व प्रो. वेस्ट भारतीय भूवैज्ञानिक

सर्वेक्षण के महानिदेशक थे. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. वाई.एस. ठाकुर थे. कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलन तथा अतिथियों के सत्कार से हुई. विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए.के. सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा स्वागत उद्बोधन में कहा कि प्रो. वेस्ट का इस विभाग को बनाने में अतुलनीय योगदान रहा और हम सभी लोग मिलकर इस परंपरा को आगे ले जायेगें. प्रो. कठल ने प्रो. वेस्ट के जीवन के बारे में विस्तार पूर्वक सभी को अवगत कराया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने प्रो. वेस्ट के द्वारा इस विभाग को स्थापित करने पर उनके विशेष योगदान पर प्रकाश डाला तथा सुझाव दिया कि प्रो. वेस्ट की जीवनी तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में एक बुकलेट तैयार की जाये. जो नवआवंतुक छात्रों को बुकलेट दी जाये जिससे वे इस महान भूवैज्ञानिक के बारे में जान सके एवं उनके द्वारा स्थापित परंपरा का निर्वहन कर सकें.

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय भटिंडा, पंजाब के वर्तमान कुलपति प्रो. आर.पी. तिवारी को प्रतिष्ठित प्रो. वेस्ट ओरेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया. इसी अवसर पर भूविज्ञान विभाग के दो सेवानिवृत्त शिक्षकों प्रो. अरूण कुमार शांडिल्य एवं प्रो. आर. के. त्रिवेदी को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया.

समस्त कार्यक्रम, प्रभारी अधिष्ठाता स्कूल ऑफ इंजी. एण्ड टेक्नोलॉजी, प्रो. वंदना सोनी एवं वर्तमान अध्यक्ष प्रो. ए.के. सिंह के नेतृत्व में तथा प्रो. पी.के. कठल, प्रो. एच. थॉमस, प्रो. आर.के. रावत, प्रो. एस.एच. आदिल, प्रो. डी.सी. मेश्राम, डॉ. के.के. प्रजापति, डॉ. राजीव खालखो, डॉ. गौरव कुमार सिंह, डॉ. सेल्वाकुमार एस., डॉ. अदिति शर्मा, डॉ. नरेन्द्र कुमार पटेल, डॉ. मनीष कुमार पुरोहित एवं डॉ. जैमनी खटीक की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ. इस आयोजन में विभाग के पूर्व छात्र श्री ए.के. केशरवानी, श्री एच.एन. पटसारिया, डॉ. सुबोध ताम्रकार भी शामिल हुये. विशिष्ट उपस्थिति व स्नेहाशीष भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के पूर्व माहनिदेशक, श्री नितीष कुमार दत्ता ने प्रदान की. विभाग के छात्रों एवं समस्त कर्मचारियों के निरंतर सहयोग से प्रो. डब्ल्यू.डी. वेस्ट का 124वें जन्मदिन का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ.

निडरता, निष्पक्षता और राष्ट्र के प्रति समर्पण पत्रकारिता के आधार स्तंभ हैं

विवि के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में भारतीय समाचार पत्र दिवस पर हुआ विचार गोष्ठी का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में भारतीय समाचार पत्र दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने भारतीय पत्रकारिता के

इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी यात्रा बड़ी ही संघर्षपूर्ण, मार्मिक एवं उद्देश्यपरक रही है जिसका स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है. संविधान में भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोत्तम माना गया है. पत्रकारिता के प्रमुख आधार स्तंभ निडरता और निष्पक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण है.

विशिष्ट अतिथि के रूप में जीवन पर्यंत शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय शर्मा ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आज अखबारों की लगातार बढ़ती संख्या जहां एक और सुखद अनुभूति प्रदान करती है तो वहीं अखबारों में बोलने और विचारों की कमी हमें चिंतन करने पर भी मजबूर कर देती है. देश मे साक्षरता तो बढ़ी लेकिन क्रिटिकल साक्षरता का विकास जिस तरह से अखबारों के माध्यम से होना चाहिए था उस तरह से नहीं हुआ. इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है.

स्वागत वक्तव्य देते हुए पत्रकारिता विभाग के डॉ. विवेक जायसवाल ने भारत में पत्रकारिता के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला और भारतीय पत्रकारिता के इतिहास के महत्व को रेखांकित किया. उन्होंने बंगाल गजट की शुरुआत से लेकर प्रिंटिंग प्रेस और तत्कालीन समय के प्रेस विरोधी नीतियों को चर्चा में रखा. उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में आज के दौर की तरह जनसंचार और पत्रकारिता के इतने विविध और प्रभावी माध्यम नहीं थे. सिर्फ प्रिंट मीडिया के रूप में अखबार ही एक मात्र माध्यम हुआ करता था. आज़ादी के आंदोलनों में भाषाई पत्रकारिता का बड़ा अहम योगदान माना जाता है जिसने एकता और अखंडता की नजीर पेश की.

मुख्य वक्ता के रूप में पत्रकारिता विभाग के डॉ. अलीम अहमद खान ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास को गहनता से

समझाया. उन्होंने बुंदेलखंड की हिंदी पत्रकारिता को प्रमुख रूप से रेखांकित करते हुए बताया कि किस तरह पत्रकारिता हर दौर में प्रसांगिक रही है. चाहे आज़ादी के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार और शोषण रहा हो या उनकी दमनकारी नीतियों के खिलाफ मुखर आवाज बनना हो, पत्रकारिता ने हमेशा अपने संघर्ष से सच को बुलंद किया. वहीं उन्होंने तेजी से बदलती तकनीक पर भी अपने विचार व्यक्त

करते हुए कहा कि आज पत्रकारिता के विविध स्वरूप हम सबके सामने है जिसमें अनेकानेक रोजगार की संभावनाएं व्याप्त है. आज संचार और पत्रकारिता का दायरा असीमित रूप ले चुका है जिसमें पेशेवरों की भारी मांग देखी जा रही है फिर चाहे मुख्यधारा के मीडिया की बात हो या फिर सोशल और डिजिटल मीडिया. प्रसार भारती से लेकर आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी स्ट्रिंगर , रिपोर्टर से लेकर एंकर, प्रोड्यूसर और अनुभवी संपादकों एवं तकनीकी दक्ष लोगो की वृहद स्तर पर मांग हैं. हमें जरूरत है अपने आपको काबिल बनाने की और समय के साथ अपनी स्किल्स को अपग्रेड करनी है. जिसके बाद इस क्षेत्र में अपार संभावनाओं के द्वार स्वतः खुल जाते हैं. इस अवसर पर विभाग के शोधार्थी दीपक ने कहा कि संविधान ने हमे आर्टिकल 19(1)(a) के तहत वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है जो एक आम नागरिक से लेकर पत्रकार को भी अपनी बात रखने की आज़ादी देता है. विभाग के शोधार्थी दिलीप चौरसिया ने कहा कि कंटेंट और क्रेडिबिलिटी हर दौर में प्रसांगिक रही है जो आज भी पत्रकारिता के लिये चुनौती बनी हुई है. विभाग के स्नातकोत्तर छात्र राजेंद्र विश्वकर्मा ने रोचक अंदाज़ में कविता के माध्यम से पत्रकारिता के उद्भव और उसके विकास की गाथा को प्रस्तुत किया. जिसकी सभी ने सराहना की. इस मौके पर विभाग के अन्य अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे. कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी अनुष्का तिवारी ने किया. आभार ज्ञापन शोधार्थी सलोनी शर्मा ने किया.

पाउडर एक्स-रे डिफ्रेक्टोमीटर (पाउडर-एक्सआरडी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीया कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में पाउडर एक्स-रे डिफ्रेक्टोमीटर (पाउडर-एक्सआरडी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया

गया, जिसमें कुल 31 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. रणवीर कुमार और डॉ. अनुपमा चंदा (प्रभारी शिक्षक, पाउडर-एक्सआरडी) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में पाउडर-एक्सआरडी तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों जैसेकि क्रिस्टलीय गुण, क्रिस्टल साइज किस प्रकार निकाला जाता है और पी-एक्सआरडी के सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी.

हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी और श्री सौरभ साह, सीएआर द्वारा पाउडर-एक्सआरडी उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर

दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा पाउडर-एक्सआरडी पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के श्री रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविंद चडार और श्री चंद्रप्रकाश सैनी की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

ग्रामीण विकास में है रोजगार के व्यापक अवसर : डॉ. योगेश पाल

ग्रामीण विकास अध्ययन में रोजगार की संभावनाओं पर संवाद कार्यक्रम आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग के शिक्षकों के द्वारा एक संवाद कार्यक्रम पं. दीनदयाल उपाध्याय कला एवं वाणिज्य (अग्रणी) महाविद्यालय एवं शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में आयोजित किया गया. स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम में जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. योगेश कुमार पाल ने संबोधित करते हुए ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उद्यमिता एवं रोजगार के अवसरों के संबंध में विद्यार्थियों को अवगत कराया. उन्होंने बताया कि ग्रामीण अर्थशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, शिक्षा आदि को ग्रामीण विकास से जोड़कर ग्रामीण भारत के विकास में योगदान किया जा सकता है. आत्मनिर्भर भारत एवं विकसित भारत की संकल्पना को भारत के गाँवों को सशक्त करके ही किया जा सकता है. नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के युग में गाँवों को उनसे जोड़ने की जरूरत है. इस पहल में विश्वविद्यालय के द्वारा संचालित स्नातकोत्तर स्तर पर ग्रामीण विकास के पाठ्यक्रम का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है. संवाद कार्यक्रम में डॉ. पाल ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के द्वारा आगामी संयुक्त विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा-2025 में इस विषय में प्रवेश लेने के लिए विधार्थियों को प्रोत्साहित किया एवं एम.ए. ग्रामीण विकास के लिए आयोजित होने वाली प्रवेश परीक्षा के संदर्भ में प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान किया गया. पं. दीनदयाल उपाध्याय कला एवं वाणिज्य (अग्रणी) महाविद्यालय में डॉ. सुनील साहू एवं डॉ. राणा सिंह कुंजर एवं शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया. कार्यक्रम में डॉ. संजय शर्मा, डॉ. चिट्टि बाबु पुच्चा, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित थे.

------//------

खबरों में विश्वविद्यालय

20वें वर्ल्ड पीस कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता महिला शांति शिक्षा नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस द्वारा 'महिला शांति शिक्षा में नेतृत्व' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान कार्यक्रम नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में आयोजित किया गया। गौरतलब है कि इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बद्ध संस्था है। वर्ष 1969 में स्थापित इस अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन का उद्देश्य पूरी पृथ्वी पर शांति शिक्षा को प्रोत्साहित करना है, जिसकी पहली बैठक वर्ष 1970 में नार्वे में हुई थी। इसकी लोकप्रियता के आधार पर वर्ष 1973 में संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्धता प्राप्त हुई और तब से निरंतर ही शांति शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रही है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र बालकोष (यूनीसेफ) एवं यूनेस्को से भी सम्बद्ध है एवं विश्व भर के विभिन्न देशों में इसकी 150 शाखाएं कार्यरत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कुमारेश मिश्रा, पूर्व वरिष्ठ संयुक्त राष्ट्र एडवाइजर डॉ. मार्कंडेय राय तथा यूनाइटेड नेशन्स एफीलिएटेड इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड पीस के अध्यक्ष डॉ. प्रियारंजन त्रिवेदी द्वारा कुलपति को यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि प्रो. नीलिमा गुप्ता का नाम शिक्षा जगत में देश की प्रतिष्ठित महिला नेतृत्व कर्ता के रूप में विख्यात है जिन्होंने चार सरकारी विश्वविद्यालयों में कुलपति के रूप में कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया है। भारत सरकार द्वारा उन्हें मध्य प्रदेश की पहली महिला कर्नल कमांडेंट पद से विभूषित कर सम्मानित किया गया है।

देशबन्धु

20 वें वर्ल्ड पीस कांग्रेस में कुलपति महिला शांति शिक्षा नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस द्वारा महिला शांति शिक्षा में नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान कार्यक्रम नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में आयोजित किया गया। गौरतलब है कि इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एजुकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध संस्था है। वर्ष 1969 में स्थापित इस अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन का उद्देश्य पूरी पृथ्वी पर शांति शिक्षा को प्रोत्साहित करना है, जिसकी पहली बैठक वर्ष 1970 में नार्वे में हुई थी। इसकी लोकप्रियता के आधार पर वर्ष 1973 में संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्धता प्राप्त हुई और तब से निरंतर ही शांति शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रही है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र बालकोष यूनीसेफ एवं यूनेस्को से भी सम्बद्ध है एवं विश्व भर के विभिन्न देशों में इसकी 150 शाखायें कार्यरत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कुमारेश मिश्रा, पूर्व वरिष्ठ संयुक्त राष्ट्र एडवाइजर डॉ. मार्कंडेय राय तथा यूनाइटेड नेशन्स एफीलिएटेड इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ वर्ल्ड पीस के अध्यक्ष डॉ. प्रियारंजन त्रिवेदी द्वारा कुलपति को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। सम्मेलन में उपस्थित सभी अतिथियों ने प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की तथा महिला शांति शिक्षा पुरस्कार हेतु बधाई दी।

नए वर्ष में देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़कर कार्य करने का लें संकल्प- कुलपति

बुंदेली अनुगूंज और हमाओ सागर थीम पर केंद्रित कैलेंडर का कुलपति ने किया विमोचन

ज्योति शर्मा,भास्कर केसरी

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के नव वर्ष 2025 के वॉल कैलेण्डर एवं टेबल कैलेण्डर का विमोचन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रशासनिक भवन के गौर समिति कक्ष में किया। इस वर्ष वॉल कैलेंडर की थीम %हमाओ सागर% रखी गई है जिसमें सागर शहर एवं आस-पास के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को दर्शाया गया है। टेबल कैलेंडर की थीम %बुन्देली अनुगूंज% रखी गई है जिसमें प्रमुख बुन्देली लोक वाद्य यंत्रों के विवरण सहित चित्रों को दर्शाया गया है।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि बीते वर्ष विश्वविद्यालय ने प्रत्येक आयामों पर कार्य करते हुए प्रगति की है। हम इक्कीसवीं सदी के एक चौथाई भाग को पूर्ण करते हुए नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस वर्ष भी हम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करें ताकि डॉ. गौर और उनके द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़ने और इसके संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष के कैलेण्डर की थीम रखी गई है। यह अपने आस-पास के परिवेश, अपनी लोक संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

इस अवसर पर प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, कैलेण्डर समिति के अध्यक्ष प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. चंदा बेन, प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. दिवाकर राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. यू.के. पाटिल, प्रो. श्वेता यादव, डॉ. पंकज तिवारी, विताधिकारी कुलदीपक शर्मा, डॉ. एस. पी. गादेवार, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. आर. के. गंगेले, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. बलवंत भदौरिया, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. रजनीश, डॉ. विवेक जायसवाल सहित कई शिक्षक मौजूद थे।

आयोजन बुंदेली अनुगूंज और हमाओ सागर थीम पर केंद्रित कैलेंडर का कुलगुरु ने किया विमोचन

नए वर्ष में देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़ें

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के नव वर्ष 2025 के कैलेंडर एवं टेबल कैलेंडर का विमोचन कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रशासनिक भवन के गौर समिति कक्ष में किया। इस वर्ष कैलेंडर की थीम 'हमाओ सागर' रखी गई है, जिसमें सागर शहर एवं आस-पास के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को दर्शाया गया है। टेबल कैलेंडर की थीम 'बुंदेली अनुगूंज' रखी गई है जिसमें प्रमुख बुन्देली लोक वाद्य यंत्रों के विवरण सहित चित्रों को दर्शाया गया है।

कैलेंडर का विमोचन करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

विवि ने हर स्तर पर की बीते वर्ष में प्रगति

इस अवसर पर कुलगुरु प्रो. नीलिमा ने कहा कि बीते वर्ष विश्वविद्यालय ने प्रत्येक आयामों पर कार्य करते हुए प्रगति की है। हम इक्कीसवीं सदी के एक चौथाई भाग को पूर्ण करते हुए नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस वर्ष भी हम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करें ताकि डा. गौर और उनके द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देशज ज्ञान, परंपरा और लोक संस्कृति से जुड़ने और इसके संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष के कैलेण्डर की थीम रखी गई है। यह अपने आस-पास के परिवेश, अपनी लोक संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करेगा। इस अवसर पर प्रो. वायएस ठाकुर, प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय, कैलेण्डर समिति के अध्यक्ष प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. चंदा बेन, प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. दिवाकर राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. यूके पाटिल, प्रो. श्वेता यादव, डा. पंकज तिवारी, वित्ताधिकारी कुलदीपक शर्मा, डा. एसपी गादेवार, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. आरके गंगेले, डा. अभिषेक बंसल, डा. बलवंत भदौरिया, डा. संजय शर्मा, डा. रजनीश, डा. विवेक जायसवाल आदि शिक्षक मौजूद थे।

भारत विज्ञान, कला, दर्शन सहित ज्ञान के सभी क्षेत्रों में सदियों से समृद्ध रहा है: विनय सहस्त्रबुद्धे

सावित्रीबाई फुले की 194वीं जयंती पर हुआ व्याख्यान

भारत विज्ञान, कला एवं ज्ञान के क्षेत्र में सदियों से समृद्ध रहा

सागर @ पत्रिका. भारत की पहली महिला अध्यापिका सावित्रीबाई फुले की 194 वीं जयंती पर डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाज विज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया। इससे पहले सावित्री बाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

मुख्य वक्ता भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि भारत सदियों से ही ज्ञान, दर्शन, योग, अध्यात्म, चिकित्सा, विज्ञान, गणित, मानविकी एवं समाजविज्ञान, भाषा एवं व्याकरण, शिल्प एवं कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में समृद्ध रहा है। आजादी के पूर्व अंग्रेजी ताकतों ने उसको सिरे से नजरअंदाज करके एक 'मैकाले केन्द्रित शिक्षा प्रणाली' में तब्दील कर दिया, लेकिन वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जैसे महत्वपूर्ण सरकारी नीतिगत प्रयास के जरिए पुरातन ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने की तरफ बढ़ गया है। यह कदम आजादी के अमृत महोत्सव का सही मायने में परिचायक है।

कार्यवाहक कुलपति प्रो. वाईएस ठाकुर ने कहा कि हमें अपने विद्यार्थियों विशेषकर युवाओं को सीखने-सिखाने की भारतीय पद्धतियों से अवगत कराने के साथ-साथ उसमें तकनीकी का एकीकरण भी करना होगा। इस मौके पर कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. संजय शर्मा और मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल आदि मौजूद रहे। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने आभार माना।

भारत विज्ञान, कला दर्शन सहित ज्ञान के सभी क्षेत्रों में सदियों से समृद्ध रहा है: सहस्त्रबुद्धे

सागर। भारत की पहली महिला अध्यापिका क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले की 194 वीं जयंती के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा सावित्री बाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के तहत पांचवां ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसका विषय भारतीय ज्ञान परम्परा की सार्वभौमिक प्रासंगिकता था कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पूर्व संसद सदस्य एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ.विनय सहस्त्रबुद्धे ने अपने बीज वक्तव्य में देश की राजनैतिक आजादी के पूर्व एवं पश्चात भारतीय ज्ञान परम्परा की स्थिति एवं उसके मुख्य पक्षों पर प्रकाश डाला। डॉ. सहस्त्रबुद्धे ने बताया कि भारत सदियों से ही ज्ञान, दर्शन, योग, अध्यात्म, चिकित्सा, विज्ञान, गणित, मानविकी एवं समाजविज्ञान, भाषा एवं व्याकरण,शिल्प एवं कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में समृद्ध रहा है। किन्तु आजादी के पूर्व अंग्रेजी ताकतों ने उसको सिरे से खारिजध्नजरअंदाज करके एक मैकाले केन्द्रित शिक्षा प्रणाली में तब्दील कर दिया। लेकिन वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जैसे महत्वपूर्ण सरकारी नीतिगत प्रयास के जरिये हमारे द्वारा अपनी पुरातन ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने की तरफ बढ़या गया कदम आजादी के अमृत महोत्सव का सही मायने में परिचायक है। क्योंकि यह न केवल अपनी प्राचीन ज्ञान विरासत का गुणगान है बल्कि यह हमें वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार तथा निर्देशित भी करता है। इसलिए पुरातन ज्ञान के आधार पर एवं उसका उपयोग करते हुए नवीन ज्ञान पद्धति को गढा जाना मौजूदा समय की प्राथमिक आवश्यकता है। क्योंकि ऐसा करके ही हम सही अर्थों में अपने स्व की पहचान कर सकेंगे और स्व से जुड़ सकेंगे। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति प्रो. वाईएस ठाकुर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें अपने विद्यार्थियों विशेषकर युवाओं को सीखने सिखाने की भारतीय पद्धतियों से अवगत कराने के साथ साथ उसमें तकनीकी का एकीकरण भी करना होगा। यह कार्य न केवल शिक्षक के द्वारा किया जाना चाहिए बल्कि इसमें अभिभावकों एवं समुदाय की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। कार्यक्रम में समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केन्द्र के समन्वयक एवं इस पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ.संजय शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

दैनिक दबंग बुन्देलखण्ड
सच का साहस.......
सागर

पर्यावरण संतुलन के लिए जैव विविधता आवश्यक : कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राणी शास्त्र विभाग में विंटर कोलोकियम के तहत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की और ब्रिजिंग जनरेशन ग्लिमरिंग लाइफ साइंस विषय पर अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने जैव विविधता के संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति में बहुत सी प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही है। हमें लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षित करना चाहिए जिससे पर्यावरण का सन्तुलन बना रहे। उन्होंने बताया कि प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे अत्याधिक निम्न तापमान पर रहने वाले जीवो की शारिरिक क्रियाविधि तथा अनूकूलन जैसे विषयों पर भी विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चर्चा की जानी चाहिए और जीव संरक्षण एवं उनके उन्नयन पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। जैव विविधता पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है। वरिष्ठ प्रो. डी. पी. गुप्ता ने नए शोधों का उल्लेख करते हुआ बताया कि बायोलॉजिकल रिसर्च की आवश्यकता अन्य शोधों से ज्यादा है क्योंकि रोज नए-नए वायरस से समस्त प्राणी प्रभावित हो रहे हैं। हम सभी रोज नए-नए वायरस के वैरिएंट से प्रभावित हो रहे हैं जिसकी रोकथाम के लिए आवश्यक है कि इन विषयों पर ज्यादा शोध हों एवं वायरस को पहचानने और इनसे बचने की नई एवं उन्नत तकनीकें विकसित की जाएँ। फार्मेसी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. यू. के. पाटिल ने जैविक खाद्य पदार्थ के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। अधिष्ठाता प्रो. वर्षा शर्मा एवं प्राणी शास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव के समन्वयन में इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संयोजक डॉ. मालविका सिकदर एवं सह-संयोजक डॉ. दीपाली जाट थीं। कार्यक्रम में पोस्टर एवं ओरल प्रेजेंटेशन का का प्रदर्शन किया जाएगा।

कार्यशाला डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में हुई संगोष्ठी, लुप्त होती प्रजातियों के संरक्षण पर किया गया मंथन

पर्यावरण संतुलन के लिए जैव विविधता आवश्यक : कुलपति

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राणी शास्त्र विभाग में विंटर कोलोकियम के तहत सोमवार को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की और 'ब्रिजिंग जनरेशनः ग्लिमरिंग लाइफ साइंस' विषय पर अपना उद्बोधन दिया।

उन्होंने जैव विविधता के संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति में बहुत सी प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं। हमें लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षित करना चाहिए जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रहे। उन्होंने बताया कि प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे अत्याधिक निम्न तापमान पर रहने वाले जीवों की शारिरिक क्रियाविधि व अनूकूलन जैसे विषयों पर भी विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चर्चा की जानी चाहिए और जीव संरक्षण एवं उनके उन्नयन पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। जैव विविधता पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है।

संगोष्ठी को संबोधित करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

संगोष्ठी में बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। • नवदुनिया

रोज नए-नए वायरस से समस्त प्राणी प्रभावित हो रहे हैं : वरिष्ठ प्रो. डीपी गुप्ता ने नए शोधों का उल्लेख करते हुआ बताया कि बायोलाजिकल रिसर्च की आवश्यकता अन्य शोधों से ज्यादा है, क्योंकि रोज नए-नए वायरस से समस्त प्राणी प्रभावित हो रहे हैं। हम सभी रोज नए-नए वायरस के वैरिएंट से प्रभावित हो रहे हैं जिसकी रोकथाम के लिए आवश्यक है कि इन विषयों पर ज्यादा शोध हों एवं वायरस को पहचानने और इनसे बचने की नई एवं उन्नत तकनीकें विकसित की जाएं। फार्मेसी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. यूके पाटिल ने जैविक खाद्य पदार्थ के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। अधिष्ठाता प्रो. वर्षा शर्मा एवं प्राणी शास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव के समन्वयन में इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संयोजक डा. मालविका सिकदर एवं सह-संयोजक डा. दीपाली जाट थीं। कार्यक्रम में पोस्टर एवं ओरल प्रेजेंटेशन का का प्रदर्शन किया जाएगा।

आदर्श शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए रोल माडल होते हैं : प्रो. राजपूत

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश के मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत बुधवार को 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत के निर्देशन में विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों में नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों के साथ संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत बैठक हुई।

मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम सभी सहायक प्राध्यापकों ने अपने अकादमिक एवं विभिन्न कार्यक्षेत्रों वा शोध के बारे में बताया। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने विश्वविद्यालय में पठन पाठन की गतिविधियों को सुदृढ़ करने, अकादमिक शोध में संलग्न होने संबंधी मार्गदर्शन देते हुए कहा कि "एनइपी के अनुसार इंटरडिसिप्लिनरी और मल्टी डिस्प्लिनरी अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिए। इसलिए इस दिशा में समाज विज्ञान के सभी विषयों को एक साथ मिलाकर संगोष्ठी, शोध-कार्य, शोध पत्र की दिशा में कार्य किए जाएंगे। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए रोल माडल होते हैं इसलिए एक सफल शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं। राजपूत ने आगामी समय में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं आयोजनों के बारे में भी चर्चा की। कार्यक्रम में डा. दिव्या भनोट, डा. संचिता मीणा, डा. अर्चना, शासना योमसो, डा. निकिता जायसवाल, डा. एकता श्रीवास्तव, डा. प्रवीण, डा. धनंजय विक्रम, डा. अखिलेश, डा. दिवाकर आदि ने सहभागिता की और अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन डा. दिव्या भनोत ने माना।

विश्वविद्यालय के कुश्ती खिलाड़ी अभिषेक यादव ने खेलो इंडिया के लिए किया क्वालीफाई

सागर,आचरण। गुरु काशी विश्वविद्यालय भटिंडा के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय कुश्ती पुरुष प्रतियोगिता में डॉक्टर हरीसिंह गौर विवि के पहलवान अभिषेक यादव ने 57 किलो वेट कैटेगिरी में 5 विश्वविद्यालयों के पहलवानों को लगातार परास्त कर रेपीचैस राउंड में पहुंचकर जीत अर्जित की। फ इनल मुकाबला में चौथा स्थान प्राप्त करते हुए खेलो इंडिया के लिए क्वालीफ ाई किया। शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ विवेक बी साठे ने खिलाड़ी एवं कोच को बधाई दी। विभाग के डॉ सुमन पटेल, अनवर खान, विनय शुक्ला, डॉ मनोज जैन, दीपक दुबे, महेंद्र कुमार ने भी पहलवान अभिषेक को बधाई दी।

समाज विज्ञान संकाय में संवाद कार्यक्रम का आयोजन

■ **आदर्श शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होते हैं- प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत**

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश के मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता और निर्देशन अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने की। विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों में नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों के साथ संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत बैठक संपन्न हुई। सभी सहायक प्राध्यापकों ने अपने अकादमिक एवं विभिन्न कार्यक्षेत्रों वा शोध के बारे में बताया। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय में पठन-पाठन की गतिविधियों को सुदृढ़ करने, अकादमिक शोध में संलग्न होने संबंधी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि एन ई पी के अनुसार इंटरडिसिप्लिनरी और मल्टी डिस्प्लिनरी अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिये। इसलिए इस दिशा में समाजविज्ञान के सभी विषयों को एक साथ मिलाकर संगोष्ठी, शोध-कार्य, शोध पत्र इत्यादि की दिशा में कार्य किए जाएंगे। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने पर जोर दिया जाना चाहिये। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होते हैं इसलिए एक सफल शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं।

उन्होंने आगामी समय में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं आयोजनों के बारे में भी चर्चा की। कार्यक्रम में डॉ दिव्या भनोट, डॉ संचिता मीणा, डॉ अर्चना, शासना योमसो, डॉ निकिता, डॉ एकता श्रीवास्तव, डॉ प्रवीण, डॉ धनंजय विक्रम, डॉ अखिलेश, डॉ दिवाकर आदि ने सहभागिता की और अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ दिव्या भनोत ने दिया।

सुबह सवेरे
A Daily News Magazine
10 Jan 2025 - Page 5

ज्ञान-महाकुंभ

प्रो. नीलिमा गुप्ता
(कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर)

शिक्षा, संस्कृति एवं भारत बोध के समागम की पहल

'ज्ञान महाकुंभ' के माध्यम से भारतीय परंपरा को शिक्षा जगत में समाहित करने का एक अनूठा प्रयास प्रख्यात शैक्षिक संगठन 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' द्वारा किया जा रहा है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को आधार बनाकर भारतीय शिक्षा की पुर्नस्थापना हेतु 'ज्ञान महाकुंभ' का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया जा रहा है। इस महाकुंभ की संकल्पना है कि भारत केन्द्रित शिक्षा का एक अभियान चलाकर, सामूहिक रूप से भारत केन्द्रित शिक्षा की पुर्नस्थापना करने में सफल हों।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत में मेले का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लाखों-करोड़ों की आस्था का प्रतीक कुंभ, मेले के रूप में प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक, और उज्जैन में आयोजित कर उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस मेले में लाखों की संख्या में श्रद्धालु आकर पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। पौराणिक मान्यता है कि यहां स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। एक तरह से यह आत्मशुद्धि का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान माना जाता है। यह मेला हिंदू धर्म की एकता और भारतीय सांस्कृतिक विकास का प्रतीक माना जाता है।

कुंभ मेले का इतिहास लगभग 2000 वर्ष पुराना है। भारतीय ऋषि-मुनि नदियों के किनारे एकत्रित होकर धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे। भारतीय संस्कृति और सभ्यता में गंगा नदी के प्रति आस्था अक्षुण्ण है। यहाँ होने वाले अनुष्ठान का सांस्कृतिक महत्व है। इस वर्ष प्रयागराज संगम पर आयोजित होने वाला महाकुंभ 12 वर्ष के पश्चात हो रहा है। महत्वपूर्ण बात यह कि यह पूर्ण महाकुम्भ है, जो 144 साल बाद आयोजित हो रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति को अपने जीवन में केवल एक बार ही पूर्ण महाकुम्भ में शामिल होने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। प्रयागराज महाकुंभ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है। प्रयागराज, गंगा, यमुना तथा सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है इसलिए इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आम भाषा में यह 'संगम स्नान' के नाम से संबोधित किया जाता है।

इस अवसर पर 'ज्ञान महाकुंभ' के माध्यम से भारतीय परंपरा को शिक्षा जगत में समाहित करने का एक अनूठा प्रयास प्रख्यात शैक्षिक संगठन 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' द्वारा किया जा रहा है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को आधार बनाकर

भारतीय शिक्षा की पुर्नस्थापना हेतु 'ज्ञान महाकुंभ' का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया जा रहा है।

इस महाकुंभ की संकल्पना है कि भारत केन्द्रित शिक्षा का एक अभियान चलाकर, सामूहिक रूप से भारत केन्द्रित शिक्षा की पुर्नस्थापना करने में सफल हों। इस आयोजन में 'हरित महाकुंभ' पर राष्ट्रीय सम्मेलन, 'एक राष्ट्र का नामः भारत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और 'भारतीय शिक्षाः राष्ट्रीय संकल्पना' पर विस्तृत राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। इसमें देश भर के कुलपति, निदेशक, शिक्षाविद, आचार्य, शासन-प्रशासन एवं निजी शैक्षिक संस्थानों से जुड़े महानुभाव, शिक्षा जगत में उल्लेखनीय कार्य कर रहे संत-महात्मा, शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे उद्योग जगत के सेवाभावी महानुभाव सम्मिलित होंगे।

ये सभी भारतीय शिक्षा की नींव को सशक्त करते हुए और एक नया रुप देकर भारतीय शिक्षा का पुनर्निर्माण करने हेतु दिशा देने का प्रयास करेंगे। इस आयोजन में दिनों दिन बढ़ती निजी शिक्षा संस्थानों की भारतीय शिक्षा में भूमिका, छात्र, महिला तथा आचार्य सम्मेलन, शासन-प्रशासन की शिक्षा में भूमिका, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषा तथा शिक्षा से आत्मनिर्भरता जैसे ज्वलंत विषयों पर गहन चर्चा होगी। ज्ञान महाकुंभ एक अद्वितीय आयोजन है जो ज्ञान, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर केंद्रित है।

ज्ञान महाकुंभ का उद्देश्य ज्ञान का आदान-प्रदान, शिक्षा और सांस्कृतिक विकास, विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के बीच संवाद तथा युवाओं को प्रेरित करके उन्हें ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ाना है। इस महाकुंभ में विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी, जिनमें व्याख्यान और सेमिनार, पैनल चर्चाएँ, कार्यशालाएँ, प्रदर्शनी और प्रदर्शन, तथा संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम शामिल हैं। शिक्षा के भारतीयकरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, मूल्य शिक्षा, भाषा जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार-विमर्श इस आयोजन के केंद्र में होंगे।

यह महत्वपूर्ण आयोजन न केवल ज्ञान, शिक्षा और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देगा बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों और विद्वानों के ज्ञान और अनुभवों का साझा मंच बनेगा। इस अनूठे आयोजन में सहभागी होकर हम भारतीय नागरिक, भारतीय संस्कृति तथा भारतीय शिक्षा से परिपूर्ण होकर एक नए भारत का निर्माण करने में अवश्य सफल होंगे। इस अवसर का हम अवश्य लाभ उठाएँ और भारतीय संस्कृति तथा भारतीय शिक्षा को जोड़ने हेतु ज्यादा संख्या में भाग लें।

जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा योग चिकित्सा केंद्रः कुलपति

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के योग शिक्षा विभाग और योग ध्यान केंद्र द्वारा स्थापित योग चिकित्सा केंद्र ने एक नई शुरुआत की है। यह केंद्र समाज के लिये निःशुल्क योग आधारित उपचारों और परामर्शों के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देगा। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने केंद्र का उद्घाटन करते हुये कहा कि यह क्लीनिक आने वाले समय में जनमानस के जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। योग के सकारात्मक प्रभावों को आज पूरे विश्व ने स्वीकार किया है और विवि इस दिशा में अल्पकालिक प्रमाणपत्र एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी शुरू करने की योजना बना रहा है। इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय की बीके डॉ. रीना ने मन प्रबंधन से उत्कृष्ट प्रशासन पर एक कार्यशाला आयोजित की। उन्होंने मन की स्थिरता और एकाग्रता के महत्व को

रेखांकित करते हुये चित्रकार और खिलाड़ी का उदाहरण दिया। कार्यक्रम में शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने नैतिक, चारित्रिक और शैक्षिक प्रगति में योग की भूमिका को उजागर किया। विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरु ने बताया कि यह चिकित्सा केंद्र सप्ताह में सोमवार और मंगलवार को दोपहर में संचालित होगा, जबकि प्रायोगिक सत्र सोमवार से शुक्रवार सुबह 6.30 से 8 बजे तक आयोजित किये जायेंगे। डॉ. मीनाक्षी ने जानकारी दी कि इस केंद्र में योग चिकित्सा, आयुर्वेद परामर्श, जीवनशैली परामर्श और आध्यात्मिक परामर्श जैसी सेवाओं के माध्यम से जीवन को सरल और सुखी बनाने का प्रयास किया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने और आभार ज्ञापन डॉ. अरुण साव ने किया। इस अवसर पर विवि के वित्ताधिकारी कुलदीप शर्मा, डॉ. विवेक साठे, महेंद्र बाथम, प्रो. राजेंद्र यादव सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

आंचलिक

जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा योग चिकित्सा केंद्र : कुलपति

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। योग शिक्षा विभाग तथा योग ध्यान केन्द्र डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के द्वारा समाज के लिए निःशुल्क योग आधारित उपचारों और परामर्शों के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए जो यह योग चिकित्सा क्लिनिक स्थापित किया गया है वह आने वाले समय में बहुत व्यापक स्वरूप में आम जनमानस के जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। उक्त उद्गार विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने योग चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। प्रो. गुप्ता ने आगे कहा कि आज योग के प्रभावों को विश्व ने स्वीकार कर लिया है ऐसे में हमारा दायित्व और ज्यादा बढ जाता है। इसलिए हम प्रयास कर रहे हैं कि अल्प कालिक प्रमाणपत्र तथा आनलाईन पाठ्यक्रम जनसाधारण हेतु प्रारंभ किए

जाये। इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय के प्रशासन विभाग के सहयोग से बी के डॉ. रीना दीदी ने मन प्रबंधन से उत्कृष्ट प्रशासन पर एक प्रायोगिक कार्यशाला सत्र का संचालन किया। डॉ. रीना दीदी ने एकाग्रता के लिए चित्रकार और खिलाडी का उदाहरण देते हुए मन की स्थिरता की आवश्यकता और महत्व को रेखांकित किया। स्वागत भाषण देते हुए शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने नैतिक चारित्रिक और शैक्षिक प्रगति में योग की भूमिका पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि यह निःशुल्क चिकित्सा केन्द्र सप्ताह में दो दिन सोमवार एवं मंगलवार को दोपहर में संचालित होगा तथा इसके संदर्भ में प्रायोगिक सत्र सोमवार से शुक्रवार प्रातः 6:30 से 8:00 बजे तक होगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. अरूण साव ने किया। क्लिनिक का संचालन करने वाली डॉ. मीनाक्षी ने बताया कि इसमें योग चिकित्सा सत्र, आयुर्वेद परामर्श, जीवनशैली परामर्श और आध्यात्मिक परामर्श के माध्यम से जीवन को सरल और सुखी बनाने का प्रयास होगा. योग केंद्र से सम्बन्धित जानकारी हेतु विभाग में संपर्क किया जा सकता है। इस अवसर पर वित्ताधिकारी कुलदीप शर्मा, शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे, महेंद्र बाथम, प्रो राजेंद्र यादव, बी के रिचा दीदी, लक्ष्मी दीदी, दीपिका दीदी, बी के राम भाई, सुनील भाई, राहुल भाई, डॉ ब्रजेश सिंह, डॉ महेंद्र शर्मा, प्रज्ञा साव, मनीष जैन, अनवर खान, प्रवीण राठौर, शंकर पटेल सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

कुलपति ने किया शुभारंभ

विवि में योग चिकित्सा क्लीनिक शुरू, लोगों को मिलेगा निःशुल्क परामर्श

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. योग शिक्षा विभाग एवं योग ध्यान केंद्र डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय ने समाज के लिए निःशुल्क योग आधारित उपचारों और परामर्श के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए जो यह योग चिकित्सा क्लीनिक स्थापित किया गया है। यह आने वाले समय में बहुत व्यापक स्वरूप में आम जनमानस के जीवन को खुशहाल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। यह बात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने योग चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

प्रो. गुप्ता ने आगे कहा कि आज योग के प्रभावों को विश्व ने स्वीकार कर लिया है ऐसे में हमारा दायित्व और ज्यादा बढ़ जाता है। हम प्रयास कर रहे हैं कि अल्पकालिक प्रमाणपत्र तथा आनलाइन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जाएं। इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय के प्रशासन विभाग

के सहयोग से डॉ. रीना दीदी ने मन प्रबंधन से उत्कृष्ट प्रशासन पर एक प्रायोगिक कार्यशाला सत्र का संचालन किया। स्वागत भाषण शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरु ने कहा कि यह निःशुल्क चिकित्सा केंद्र सप्ताह में दो दिन सोमवार एवं मंगलवार को दोपहर में संचालित होगा। संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने तथा आभार डॉ. अरूण साव ने किया। क्लीनिक का संचालन करने वाली डॉ. मीनाक्षी ने बताया कि इसमें योग चिकित्सा सत्र, आयुर्वेद परामर्श, जीवनशैली परामर्श और आध्यात्मिक परामर्श के माध्यम से जीवन को सरल और सुखी बनाने का प्रयास होगा। इस अवसर पर वित्ताधिकारी कुलदीप शर्मा, शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे, महेंद्र बाथम, प्रो राजेंद्र यादव, रिचा दीदी, लक्ष्मी, दीपिका, राम भाई, सुनील भाई, राहुल भाई, डॉ ब्रजेश सिंह, डॉ. महेंद्र शर्मा, प्रज्ञा साव, मनीष जैन, अनवर खान, प्रवीण राठौर, शंकर पटेल सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक शोध से बेहतर दिशा मिलती है: प्रो. शशांक शेखर

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस पर उन्नत भारत अभियान और विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बरकतउल्लाह विवि के समाज शास्त्र एवं समाज कार्य विभाग के प्रो. डॉ. शशांक शेखर ठाकुर ने ग्रामीण विकास के लिये सामाजिक शोध विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. ठाकुर ने कहा कि क्षेत्र कार्य से मूलभूत बाते सीखने को मिलती हैं। सामाजिक शोध से ग्रामीण विकास की योजनाओं को नयी दिशा मिलती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि सागर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विषय की स्थापना और विकास की यात्रा गौरवशाली है। प्रो. श्यामाचरण दुबे, प्रो. आईएस चौहान, प्रो. एन के गौरहा जैसे विवि समाज वैज्ञानिकों ने इस विभाग को शिक्षा और शोध से नयी समृद्धि दी है। इस विभाग ने कुलपति, भारतीय हाई कमिश्नर, कुशल प्रशासक, शिक्षक, अधिकारी, राजनीतिज्ञ, समाजसेवी और श्रेष्ठ नागरिक दिये हैं। प्रो. राजपूत ने कहा कि समाजशास्त्र विभाग विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर के सपनों के अनुरूप शोध की दिशा में निरंतर संलग्न रहता है। ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय समृद्धि और संस्कृति संरक्षण की दिशा में भी विभाग क्षेत्र कार्य एवं शोध के माध्यम से निरंतर योगदान दे रहा है। एक भारत श्रेष्ठ भारत और उन्नत भारत की संकल्पना को सार्थक आधार देने के लिये समाजशास्त्र विषय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर वृक्षारोपण और विद्यार्थी सम्मान स्टूडेंट ऑफ दि ईयर का भी आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं ने अपनी जिज्ञासा रखी, जिसका समाधान विषय विशेषज्ञ ने किया। कार्यक्रम में विभागीय शिक्षक प्रो. काली नाथ झा, डॉ. नंदी पटोदिया, डॉ. शिवशंकर जेना, डॉ. शासना योमसो, डॉ. रविदास सहित शोधार्थियों, छात्र-छात्राओं और कर्मचारियों ने सहभागिता की।

हिंदी विभाग में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर व्याख्यान का आयोजन

आचरण संवाददाता

सागर। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'हिंदी बने वैचारिक स्वराज की विश्व चेतस भाषा' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। आयोजन में मुख्य अतिथि और वक्ता के रूप में प्रख्यात दार्शनिक और चिंतक प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा को आमंत्रित किया गया। अम्बिकादत्त शर्मा ने अपने व्याख्यान में हिंदी के राजनैतिक, सामाजिक और विश्वव्यापी सरोकारों के साथ वैश्विक स्तर पर हो साहित्यिक अनुवाद पर बात रखी। साथ ही उन्होंने भाषा के आत्मसात और तत्सात को व्याख्यायित कर हिंदी के साथ आत्मसात होने की बात की। अम्बिकदत्त शर्मा ने हिंदी में साहित्यिक सर्जना हेतु भी नवीन पथ सुझाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की, विशिष्ट उपस्थिति के रूप में भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रो.चंदा बैन, कार्यक्रम के संयोजक के रूप में डॉ. हिमांशु कुमार उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में हिंदी विभाग के प्रो. राजेंद्र यादव, डॉ. संजय नैनवार, डॉ. अफ़रोज़ बेगम, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ.सुजाता मिश्रा, डॉ. अवधेश कुमार, प्रदीप सौर, दर्शनशास्त्र के प्रो. अनिल तिवारी, डॉ. अर्चना, डॉ. देबोस्मिता, संस्कृत विभाग से डॉ. शशिकुमार सिंह, डॉ.रामहेत गौतम, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. किरण आर्या, जीवन पर्यन्त शिक्षा विभाग से डॉ. संजय शर्मा तथा हिंदी व अन्य विभागों के शोधार्थी-विद्यार्थी उपस्थित रहे। औपचारिक आभार ज्ञापन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. अरविन्द कुमार ने किया।

भोपाल, शनिवार, 11 जनवरी, 2025 **03**

यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न केप

साउथ अफ्रीका के प्रो. के.सी. पाटीदार का गणित विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

दै. जनचिंगारी

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के अपने पांच दिवसीय रिसर्च कोलेब्रेटिव को लेकर भारतीय प्रवास पर आए यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका के प्रो. के.सी. पाटीदार जो भारतीय गणित के विशेषज्ञ हैं. वह 20 वर्षों से यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका में गणित विभाग में कार्यरत हैं. 10 जनवरी 2025 को विभाग के रामानुजन व्याख्यान कक्ष में आयोजित विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसमें प्रो. पाटीदार द्वारा 'रोबस्ट स्पेक्ट्रल मेथड्स फॉर प्राइसिंग ऑप्शनस' शीर्षक पर व्याख्यान दिया गया, प्रोफेसर पाटीदार साउथ अफ्रीका रिसर्च फाउंडेशन के ष्ट1 श्रेणी के गणितज्ञ हैं, गूगल स्कॉलर पर लगभग 2000 से अधिक उनका साइटेशन है तथा उनके द्वारा प्रकाशित 106 उच्च स्तरीय शोध पत्र प्रकाशित हैं उनके इस शोध प्रवास से विभाग के सभी शिक्षक, शोध छात्र इस विषय में शोध कार्य पर चर्चा कर लाभान्वित हुए. व्याख्यान के प्रारंभ में विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आर.के. गंगेले ने उनका पुष्प गुच्छ देकर स्वागत करते हुए संक्षिप्त परिचय दिया. व्याख्यान के अंत में प्रोफेसर यू.के. खेड़लेकर द्वारा शाल-श्रीफल से सम्मानित किया एवं डॉ. एम.के. यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया व्याख्यान के दौरान विभाग के शिक्षक डॉ. सुधांशु कुमार, डॉ. आर. के. पांडेय, डॉ. शिवानी खरे, डॉ. विपिन कुमार, डॉ. अंकित रूही, डॉ. भूपेंद्र एवं सभी शोध छात्र उपस्थित रहे।

विवि के गणित विभाग में दक्षिण अफ्रीका के प्रोफेसर का व्याख्यान हुआ

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के पांच दिवसीय रिसर्च फोलेनेटिव को लेकर यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका के प्रोफेसर केसी पाटीदार ने विभाग के रामानुजन व्याख्यान कक्ष में विशेष व्याख्यान दिया। प्रो. पाटीदार द्वारा 'रोबस्ट स्पेक्ट्रल मेथड्स फॉर प्राइसिंग ऑप्शनस' शीर्षक पर व्याख्यान दिया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. आरके गंगेले ने उनका स्वागत करते हुए संक्षिप्त परिचय दिया। प्रो. यूके खेडलेकर ने शॉल-श्रीफल से उन्हें सम्मानित किया। आभार डॉ. एमके यादव ने माना। इस मौके पर डॉ. सुधांशु कुमार, डॉ. आरके पांडेय, डॉ. शिवानी खरे, डॉ. विपिन कुमार, डॉ. अंकित रुही, डॉ. भूपेंद्र आदि मौजूद थे।

समावेशी शिक्षण व्यवस्था ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकती है

एसईडीजी सेल की बैठक, दिव्यांगों के लिए युवा महोत्सव मनाने के लिए भेजा जाएगा विशेष प्रस्ताव

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के दिशा निर्देश पर विश्वविद्यलय में स्थापित सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह प्रकोष्ठ (एसईडीजी सेल) की बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया कि दिव्यांग विद्यार्थीयों के लिए प्रथक से राष्ट्रीय स्तर का युवा महोत्सव मनाने सामाजिक अधिकारिता न्याय मंत्रालय एवं अखिल भारतीय विवि संगठन को विशेष प्रस्ताव भेजा जाएगा। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षा, लैंगिक समानता, दिव्यांगजन के लिए सुविधाएं, कोई गरीबी नहीं, अच्छे कार्य एवं आर्थिक विकास को हासिल करने के लिए व सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरों की समानता उपलब्ध कराना विवि के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य में से एक है। उन्होंने बैठक में उपस्थित विभागाध्यक्षों, अधिष्ठाताओं एवं अन्य सदस्यों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का आव्हान् करते हुए कहा कि समावेशी शिक्षण व्यवस्था ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकती है। प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने प्रकोष्ठ के उद्देश्यों एवं प्रकोष्ठ द्वारा की जाने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला। सहायक प्रध्यापक डा. नवीन सिंह ने दिव्यांग विद्यार्थीयों के लिए विवि में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं भावी योजनाओं पर पीपीटी के द्वारा प्रस्तुतीकरण दिया।

कुलपति ने दिव्यांगों के लिए युवा महोत्सव मनाने विशेष प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए।

दैनिक भास्कर | सागर

आयोजन • कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह प्रकोष्ठ की बैठक ली

विश्वविद्यालय में दिव्यांगों के लिए अलग से राष्ट्रीय युवा उत्सव और खेल प्रतियोगिताएं कराने का प्रस्ताव

भास्कर संवाददाता | सागर

एसईडीजी सेल की बैठक को संबोधित करतीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के दिशा निर्देश पर विश्वविद्यालय में स्थापित सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह प्रकोष्ठ की बैठक में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। उन्होंने कहा विवि में उत्कृष्ट शिक्षा, लैंगिक समानता, दिव्यांग जन के लिए सुविधाएं, कोई गरीबी नहीं, अच्छे कार्य एवं आर्थिक विकास को हासिल करने के लिये तथा सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन के साथ-साथ अवसरों की समानता उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है। उन्होंने बैठक में उपस्थित विभागाध्यक्षों, अधिष्ठाताओं एवं अन्य सदस्यों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का आह्वान करते हुए कहा समावेशी शिक्षण व्यवस्था ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकती है। प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने प्रकोष्ठ के उद्देश्यों एवं प्रकोष्ठ की वार्षिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नवीन सिंह ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं भावी योजनाओं पर पीपीटी के द्वारा प्रस्तुतीकरण दिया। प्रवेश प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. दिवाकर शुक्ला ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रवेश के दौरान दी जाने वाली सुविधाओं एवं उनका डेटाबेस तैयार करने योजना प्रस्तुत की। जिससे साल भर विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया जा सके। उन्होंने बताया विश्वविद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिगम संसाधन केंद्र संचालित है। जिसमें ब्रेल मशीन के द्वारा पुस्तकों को ब्रेल लिपि में बदलने की सुविधा प्रदान की जा रही है। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सुगम्य पुस्तकालय की सुविधा भी शुरू की गई है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट को दिव्यांग फ्रेंडली बनाया गया है। बैठक में अधिष्ठाता छात्र गतिविधियां, परीक्षा प्रभारी, निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालय आईटी प्रभारी, प्रभारी यंत्री विभाग, केंद्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष, छात्रावास वार्डन एवं प्रभारी सांस्कृतिक गतिविधियां ने साल भर दिव्यांग एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए की जाने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला। बैठक में तय किया गया कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अलग से राष्ट्रीय स्तर का युवा महोत्सव मनाने सामाजिक अधिकारिता न्याय मंत्रालय एवं अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संगठन को विशेष प्रस्ताव भेजा जाएगा। खेल आयोजित करने स्पेशल ओलंपिक भारत को प्रस्ताव भेजा जाएगा। साथ ही दिव्यांग विद्यार्थियों की यूडीआईडी कार्ड बनाने के लिए विश्वविद्यालय में कैंप लगाया जाएगा।

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नीपा नई दिल्ली में अधिगम अक्षम विद्यार्थियों के लिए बैठक में विवि द्वारा की गई इस विशेष पहल की सराहना की गई। विवि के अधिगम संसाधन केंद्र को एक देशव्यापी मॉडल केंद्र के रूप में स्थान मिलने पर कुलपति ने प्रसन्नता जताई।

विवि के उन्नत अनुसंधान केंद्र में एक दिवसीय कार्यशाला

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र में सोमवार को इंडक्टिवली कपल्ड मास स्पेक्ट्रोमेट्रीपर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वक्ता डॉ. विवेक प्रकाश मालवीय, प्रो. एके सिंह ने आइसीपीएमएस मशीन से हेवी मेटल डिटेक्शन व विभिन्न सैंपल की जानकारी दी। कार्यशाला में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों से आए प्रतिभागियों को आइसीपीएमएस मशीन पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव द्वारा केंद्र के द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बारे में बताया गया। विश्वविद्यालय में संचालित होने वाली आगामी कार्यशालाओं के बारे में अवगत कराया गया और प्रशिक्षण के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया।

आचरण

एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

सागर,आचरण। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय अलग-अलग परिष्कृत उपकरणों पर कार्यशाला आयोजित कर रहा है. इसी संदर्भ में विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र में इंडक्टिवली कपल्ड मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया. उक्त कार्यशाला में मुख्य वक्ता डॉ. विवेक प्रकाश मालवीय एवं प्रो. ए.के. सिंह रहे जिन्होंने आईसीपीएमएस मशीन से हेवी मेटल डिटेक्शन एवं विभिन्न सैंपल में मैटेलिक कंसंट्रेशन कैसे निकाला जाता है, इस बारे में बताया. कार्यशाला में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों से आए प्रतिभागियों को आईसीपीएमएस मशीन पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण दिया गया. कार्यक्रम की शुरुआत में उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव द्वारा केंद्र के द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं के बारे में बताया गया एवं विश्वविद्यालय में संचालित होने वाली आगामी कार्यशालाओं के बारे में अवगत कराया गया एवं प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी गई।

सांस्कृतिक समन्वय और आध्यात्मिक चेतना का पर्व है मकर संक्रांति : कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

■ मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति एक पवित्र उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व है। लोग इस अवसर पर एक-दूसरे को संदेशों के माध्यम से बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं लेकिन यह समागम इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि लोग मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अलग-अलग क्षेत्रों, भाषाओं एवं संस्कृतियों से जुड़े नव नियुक्त शिक्षकों ने अपनी सेवायें देनी शुरू की है। विभिन्न संस्कृतियों के समागम एवं समन्वय से हम सभी विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों को शिखर तक ले जायेंगे। विश्वविद्यालय में नवागंतुक शिक्षकों के लिए यह आयोजन इस मायने में विशेष है कि एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समागम के जरिये वे सब एक दूसरे से परिचित हो सकेंगे। कुलपति ने सभी को इस अवसर बधाई एवं शुभकामनायें देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है। कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने सभी को मकर संक्रांति एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं साथ ही सभी नव नियुक्त शिक्षकों को बधाई देते हुए डॉक्टर गौर के सपनों को साकार करने और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर बनने वाले व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कुलाधिपति, कुलपति एवं शिक्षकों ने पतंग उड़ाकर विवि के उच्च शिखर पर पहुँचने का सांकेतिक महत्त्व दशार्या। इस अवसर पर विश्विद्यालय के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों ने अपना परिचय भी प्रस्तुत किया।

28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित विवि के छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान इस अवसर पर भोपाल में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित छात्रों को कुलाधिपति एवं कुलपति ने बधाई दी। इस छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। गौरतलब है कि इस आयोजन में सम्मिलित छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था और समूह लोकगीत में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। छात्र समूह में यश गोपाल, गगन राज, साक्षी, संजय, यश पाठक, गोलू, विधान एवं अन्य थे। आयोजन में विश्विद्यालय के शिक्षक प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. एच. थामस, प्रो. संजय जैन, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. अनिल जैन, डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. अरविन्द गौतम, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ हिमांशु, डॉ. राकेश सोनी, सहित कई शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में मिलन समारोह हुआ आयोजित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में मकर संक्रांति के अवसर पर मिलन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति के महत्व को रेखांकित करते हुये इसे सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का पर्व बताया। उन्होंने कहा कि इस पर्व के माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है। नव नियुक्त शिक्षकों का स्वागत करते हुये कहा कि विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय से विवि नई उपलब्धियां हासिल करेगा। उन्होंने नवागंतुक शिक्षकों के परिचय को सामाजिक और सांस्कृतिक समागम के रूप में देखा और सभी को शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने मकर संक्रांति और नववर्ष की शुभकामनायें देते हुये नव नियुक्त शिक्षकों को डॉ. गौर के सपनों को साकार करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में पारंपरिक व्यंजनों का आयोजन हुआ और पतंगबाजी के माध्यम से विश्वविद्यालय की प्रगति का सांकेतिक प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के दौरान भोपाल में आयोजित 28 वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में विश्वविद्यालय के छात्रों की उपलब्धि का भी जश्न मनाया गया। लोकगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र समूह को कुलपति और कुलाधिपति ने सम्मानित किया। इस समूह ने मप्र का प्रतिनिधित्व किया था। कार्यक्रम में प्रो. वायएस ठाकुर, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. एच थामस, प्रो. संजय जैन, प्रो. कालीनाथ झा, डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. अरविंद गौतम सहित कई शिक्षक, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

थल सेना दिवस: महार रेजिमेंट और डॉ.हरिसिंह गौर विवि के बीच हुआ एमओयू

सेना की नौकरी के साथ रोजगारपरक कोर्स कर रहे अग्निवीर, पहले बैच के 491 का परिणाम जारी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. देश सेवा के प्रति युवाओं का समर्पण कम नहीं है। बड़ी संख्या में अग्निवीर बनकर युवा भारतीय सेना में शामिल हो रहे हैं। इन अग्निवीरों के लिए डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय ने नई पहल शुरू की है। विवि द्वारा कम्युनिटी और डिस्टेंस एजुकेशन के कोर्स शुरू कर महार रेजिमेंट के साथ एमओयू किया है।

इसके चलते डॉ. हरिसिंह गौर मप्र का ऐसा पहला विश्वविद्यालय बन गया है, जहां सेना जॉइन करने के बाद अग्निवीर आगे की पढ़ाई भी कर रहे हैं। अग्निवीर एक अल्पकालीन सेवा अवधि है, इसमें एक सीमा अवधि के बाद जवान रिटायर्ड हो जाते हैं, सेना से बाहर होने के बाद भी उनके पास रोजगार के साधन रहें, इसके लिए ये कोर्स कराए जा रहे हैं। इस वर्ष ही महार रेजिमेंट में आए 491 अग्निवीरों ने विवि में प्रवेश लिया था, जिनकी परीक्षा संपन्न कराकर परीक्षा परिणाम जारी कर दिया है।

मीडिया प्रभारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि इसका उद्देश्य है कि हमारे कम उम्र के सेना के जवान या अग्निवीर पढ़ाई में पीछे न रह जाएं, इसलिए विश्वविद्यालय ने यह जिम्मेदारी उठाई है कि उनकी शिक्षा बाधित नहीं होगी और उन्हें उच्च शिक्षा दी जाएगी। अग्निवीरों की पढ़ाई के लिए विवि ने सर्टिफिकेट कोर्स इन प्रोफेशनल कम्युनिकेशन और सर्टिफिकेट कोर्स इन इंटरप्रेन्योरशिप शुरू किया है। इन कोर्स में बड़ी संख्या में अग्निवीर रूझान दिखा रहे हैं।

अग्निवीरों को मिलेगा रोजगार

इस वर्ष विश्वविद्यालय के कम्युनिटी कॉलेज में संचालित 491 अग्निवीरों ने प्रवेश लिया था, जिनकी परीक्षा संपन्न कराकर परीक्षा परिणाम जारी कर दिया गया है। सर्टिफिकेट कोर्स इन प्रोफेशनल कम्युनिकेशन में 320 अग्निवीरों ने प्रवेश लिया था जिनमें से 306 अग्निवीर उत्तीर्ण हुए। वहीं सर्टिफिकेट कोर्स इन इंटरप्रेन्योरशिप में 171 अग्निवीरों ने प्रवेश लिया था जिसमें 166 अग्निवीरों पाठ्यक्रम पूर्ण किया है।

भारतीय सेना की एक इकाई के रूप में महार रेजिमेंट बहादुर एवं कुशल सैनिक तैयार कर रही है। विवि इन सैनिकों को डिग्री प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रहा है, ताकि भारतीय सेना के जवान सेवाकालीन समय में भी अपनी उच्च शिक्षा जारी रख सकें।
प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह

सांस्कृतिक समन्वय और आध्यात्मिक चेतना का पर्व है मकर संक्रांतिः कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दै.जनचिंगारी- 9302303212

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति एक पवित्र उत्सव के रूप में मनाया जाता है. यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व है. लोग इस अवसर पर एक-दूसरे को संदेशों के माध्यम से बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं लेकिन यह समागम इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि लोग मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अलग-अलग क्षेत्रों, भाषाओं एवं संस्कृतियों से जुड़े नव नियुक्त शिक्षकों ने अपनी सेवायें देनी शुरू की है. विभिन्न संस्कृतियों के समागम एवं समन्वय से हम सभी विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों को शिखर तक ले जायेंगे. विश्वविद्यालय में नवागंतुक शिक्षकों के लिए यह आयोजन इस मायने में विशेष है कि एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समागम के जरिये वे सब एक दूसरे से परिचित हो सकेंगे. कुलपति ने सभी को इस अवसर बधाई एवं शुभकामनायें देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है।

कुलाधिपति श्री कन्हैयालाल बेरवाल ने सभी को मकर संक्रांति एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं साथ ही सभी नव नियुक्त शिक्षकों को बधाई देते हुए डॉक्टर गौर के सपनों को साकार करने और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दीं. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर बनने वाले व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया. कुलाधिपति, कुलपति एवं शिक्षकों ने पतंग उड़ाकर विवि के उच्च शिखर पर पहुँचने का सांकेतिक महत्त्व दर्शाया. इस अवसर पर विश्विद्यालय के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों ने अपना परिचय भी प्रस्तुत किया।

28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित विवि के छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान इस अवसर पर भोपाल में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित छात्रों को कुलाधिपति एवं कुलपति ने बधाई दी. इस छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है. गौरतलब है कि इस आयोजन में सम्मिलित छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था और समूह लोकगीत में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया. छात्र समूह में यश गोपाल, गगन राज, साक्षी, संजय, यश पाठक, गोलू, विधान एवं अन्य थे। आयोजन में विश्विद्यालय के शिक्षक प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. एच. थामस, प्रो. संजय जैन, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. अनिल जैन, डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. अरविन्द गौतम, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ हिमांशु, डॉ. राकेश सोनी, सहित कई शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

आध्यात्मिक चेतना का पर्व है मकर संक्रांति : कुलपति

मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह, स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति एक पवित्र उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व है। लोग इस अवसर पर एक दूसरे को संदेशों के माध्यम से बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं लेकिन यह समागम इस मायने में महत्वपूर्ण है कि लोग मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अलग अलग क्षेत्रों, भाषाओं एवं संस्कृतियों से जुड़े नव नियुक्त शिक्षकों ने अपनी सेवायें देनी शुरू की है। विभिन्न संस्कृतियों के समागम एवं समन्वय से हम सभी विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों को शिखर तक ले जायेंगे। कुलपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है। कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल ने सभी को मकर संक्रांति एवं नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं साथ ही डॉक्टर गौर के सपनों को साकार करने और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर विवि के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर बनने वाले व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कुलाधिपति, कुलपति एवं शिक्षकों ने पतंग उड़ाकर विवि के उच्च शिखर पर पहुंचने का सांकेतिक महत्व दर्शाया। इस अवसर पर विवि के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों ने अपना परिचय भी प्रस्तुत किया। इस अवसर पर भोपाल में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव में सम्मिलित छात्रों को कुलाधिपति एवं कुलपति ने बधाई दी। इस छात्र समूह को लोकगीत में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। छात्र समूह में यश गोपाल, गगन राज, साक्षी, संजय, यश पाठक, गोलू, विधान एवं अन्य थे।

युवाओं की ऊर्जा व क्षमता के उपयोग से भारत बनेगा विकसित: डॉ. मार्कंडेय राय

विश्वविद्यालय में स्थापित होगा शांति केंद्र, ग्लोबल पीस फाउंडेशन के साथ हुआ एमओयू

स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस का आयोजन स्वर्ण जयंती सभागार में मंगलवार को किया गया। इस मौके पर विश्वविद्यालय एवं ग्लोबल पीस फाउंडेशन के साथ अकादमिक एवं शैक्षणिक समझौता संपन्न हुआ। समझौता पत्रक पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं ग्लोबल पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय ने हस्ताक्षर किए। इसके तहत पीस लीडर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अन्य अकादमिक गतिविधियां आयोजित की जाएगी। कुलपति ने विश्वविद्यालय में एक शांति केंद्र की शुरुआत किए जाने की घोषणा भी की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. मार्कंडेय राय ने कहा कि डॉ. गौर के प्रयासों से यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था और आज इसकी कीर्ति पताका देश-विदेश में विद्यमान है। हमारे आध्यात्मिक जीवन में सागर का विशेष महत्व है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय उच्च शिखर पर पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि आज विकसित भारत की बात हो रही है। केवल सरकारी प्रयासों से भारत विकसित नहीं होगा बल्कि इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा कि भारत सबसे युवा आबादी वाला देश है। हम सबका यह कर्तव्य है कि हम अपने युवाओं को मौका दें, उन्हें आगे लाएं, उन्हें शांति दूत के रूप में प्रशिक्षित करें। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विकसित भारत बनाने में महिला सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। हम डॉ. गौर के दूत हैं। उनके विचारों, सपनों के अनुरूप इस विवि को आगे ले जाना है।

यूट्यूब चैनल 'गौर-प्लस' किया लांच

विश्वविद्यालय के ईएमएमआरसी केंद्र द्वारा निर्मित यूट्यूब चैनल 'गौर प्लस' भी लांच किया गया। केंद्र के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने बताया कि इस चैनल में विद्यार्थियों के पठन-पाठन की बहुत सी सामग्री, वृत्त चित्र, रूचि पूर्ण, मनोरंजक एवं ज्ञानप्रद सामग्री निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब सहित कई राज्यों के नृत्य का प्रदर्शन किया।

छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं... पुस्तकों का विमोचन

डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का हुआ आयोजन

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन स्वर्ण जयंती सभागार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्लोबल पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ.मार्कंडेय राय, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कन्हैयालाल बेरवाल एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में यह आयोजन संपन्न हुआ। केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह की शुरुआत से पूर्व सभी अतिथियों ने गौर समाधि स्थल पहुंचकर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ गौर को पुष्प अर्पित कर नमन किया। तत्पश्चात अतिथियों ने डॉ.गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संपादित पुस्तक प्रज्ज्वलित दीपशिखा प्रो नीलिमा गुप्ता का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इसके साथ ही ग्लोबल पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ मार्कंडेय राय और प्रो सुरेन्द्र पाठक द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी किया गया। विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के निर्देशन में छात्र छात्राओं ने भारत की सांस्कृतिक विविधतापूर्ण नृत्यों के माध्यम से विविधता में एकता का संदेश दिया। छात्र छात्राओं ने महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब सहित कई राज्यों के नृत्य का प्रदर्शन किया। प्रसिद्ध बुंदेली लोकनृत्य बधाई की भी प्रस्तुति हुई।

विवि में स्थापित होगा शांति केंद्र : डॉक्टर हरीसिंह गौर विवि सागर एवं ग्लोबल पीस फाउंडेशन के साथ अकादमिक एवं शैक्षणिक समझौता संपन्न हुआ। समझौता पत्रक पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता एवं डॉ मार्कंडेय राय ने हस्ताक्षर किये। इसके तहत फाउंडेशन द्वारा पीस लीडर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अन्य अकादमिक गतिविधियां आयोजित की जायेंगी।घोषणा की कि विवि में एक शांति केंद्र की शुरुआत की जायेगी। कार्यक्रम में ईएमएमआरसी द्वारा निर्मित डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन, अतिथियों ने यूट्यूब चैनल गौर प्लस लांच किया गया। साथ ही भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के म्यूजियम डिवीजन द्वारा अनुदान के बाद प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में पूर्व से स्थापित पुरातत्व संग्रहालय के विस्तारित भवन के निर्माण के लिए कार्य आरम्भ किया गया। कुलपति ने अनुष्ठान के साथ ईंट रखकर भवन निर्माण की आधारशिला रखी।

भविष्य में कम खर्च में दवाइयां | **विश्वविद्यालय एवं भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर मुंबई के कोलैबोरेशन में लंदन में प्रस्तुत हुआ शोध**

कार्बन नैनोपार्टिकल्स से स्वस्थ व बीमार कोशिकाओं की होगी पहचान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. बदलती दिनचर्या की वजह से कई तरह की बीमारियां लोगों को अपनी चपेट में ले रही हैं। लोगों के स्वस्थ शरीर की पहचान है कि उसमें बीमारी, कीटाणु या कमजोरी न हो। संपूर्ण शरीर को निर्माण करने वाली प्रत्येक कोशिका ही होती है। व्यक्ति के शरीर में बीमार और स्वस्थ कोशिकाओं की पहचान के लिए डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में एक नई रिसर्च हुई है। इस रिसर्च के माध्यम से आसानी से ऐसी कोशिकाओं की पहचान की जा सकती है।

विश्वविद्यालय में माइक्रोबायोलॉजी विभाग में कार्यरत डॉ. योगेश भार्गव ने यह रिसर्च की है। उन्होंने बताया कि कार्बन एटम से निर्मित नए प्रकार के क्वांटम नैनोपार्टिकल जो कि दस नैनोमीटर से भी सूक्ष्म (एक मीटर का अरबवां हिस्सा) होते हैं, पर अपना शोध कार्य किया है। लैब में बनाए गए नैनोपार्टिकल की खूबी ये है कि ये किसी भी रंगों में बनाए जा सकते हैं। इनमें स्वस्थ कोशिका एवं बीमार कोशिकाओं की पहचान करने की शक्ति होती है।

ये स्वस्थ कोशिकाओं को हानि नहीं पहुंचाते हैं। इन पर मौजूद अन्य केमिकल फंक्शनल ग्रुप एक दवाई रूपी कार्य करते हैं। ये बीमार कोशिकाओं तक सफलता पूर्वक पहुंचाए जा सकते हैं और उनको पुनः स्वस्थ किया जा सकता है।

लंदन की पत्रिका में हुआ शोध पत्र प्रकाशित

डॉ. योगेश ने बताया कि दो वर्षों की मेहनत के बाद यह शोध पूरा हुआ है। उन्होंने बताया कि नैनोपार्टिकल्स कई तरह के होते हैं। अब तक वैज्ञानिक लैड, आयरन और मैग्नीशियम से नैनोपार्टिकल्स की खोज करते थे। उन्होंने बताया कि लैब में मौजूद बड़ी-बड़ी मशीनों की सहायता कार्बन से नैनोपार्टिकल्स बनाए हैं। अभी हाल ही में एक शोध पत्र इन्हीं कार्बन क्वांटम डॉट्स पर नैनोस्केल पत्रिका (लंदन) से जनवरी 2025 को प्रकाशित हुआ है। यह कार्य विश्वविद्यालय एवं भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर मुंबई के कोलैबोरेशन में संपन्न हुआ है। उन्होंने बताया कि इसमें पीएचडी छात्र अश्विनी वाघमारे की भूमिका अहम रही है। इस रिसर्च से भविष्य में आम लोगों को कम कीमत पर भी दवाएं उपलब्ध हो सकेंगी।

सौगात | **डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्युनिटी कॉलेज के भवन का हुआ उद्घाटन**

कम्युनिटी कॉलेज को मिलेगा नया स्वरूप...उत्पादों के प्रदर्शन, बिक्री के लिए होगा कांउटर

● सागर/ आरएनएन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्युनिटी कॉलेज के भवन का उद्घाटन कुलाधिपति केएल बेस्वाल, जीपीएफके अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय और कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में हुआ। कुलाधिपति ने कहा कि कम्युनिटी कॉलेज बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्वरोजगार को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कौशल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी शिक्षा के साथ हुनरमंद बने। इस मौके पर डॉ. मार्कंडेय राय ने फैशन वर्कशॉप में विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोडक्ट देखे तथा विद्यार्थियों के कार्य की सराहना की। कम्युनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी प्रो. एसके काशव ने बताया कि कम्युनिटी कॉलेज द्वारा वर्तमान में स्किल डेवलपमेंट के 19 कोर्स संचालित हो रहे हैं। वर्तमान में कॉलेज के पास लगभग 550 से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश है। उन्होंने अतिथियों को कम्युनिटी कॉलेज के उत्कृष्ट कार्यों एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि नवआवंटित भवन में कम्युनिटी कॉलेज को नया स्वरूप देने का कार्य किया जायेगा। फैशन डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिये अत्याधुनिक सिलाई मशीन वर्कशॉप तैयार की जायेगी। इस परिसर में एक कॉमन कांउटर तैयार किया जायेगा जिसमें फैशन मशरूम, फूड प्रोसेसिंग, वर्मीकम्पोस्टिंग इत्यादि के कोर्स के विद्यार्थी स्वयं के द्वारा तैयार प्रोडक्ट जैसे डिजाईनर लहंगा, सूट, साड़ी, हैंडिक्राफ्ट, शो सजावट सहित मशरूम, फूड प्रोडक्ट में अचार, जैली, हनी प्रोडक्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट खाद सहित अन्य सामग्री रखी जायेगी। प्रोडक्ट बिक्री के बाद राशि विद्यार्थियों के खाते में जायेगी।

विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में युवा दिवस के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में स्वामी विवेकानन्द जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ अर्चना वर्मा ने कार्यक्रम में शामिल सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की संरचना का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के विचारों को आत्मसात करने और उन्हें अपने चरित्र का हिस्सा बनाने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। विभागाध्यक्ष डॉ अनिल कुमार तिवारी ने विवेकानन्द के विचारों में आध्यात्म और समाज के समन्वय पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सेन्टर फॉर फिलॉसफी जवाहरलाल नेहरू विवि के आचार्य प्रो. ए. नटराजू ने स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों और मूल ग्रन्थों के अध्ययन की महत्ता पर चर्चा की। उन्होंने सभी को विवेकानन्द के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन में दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने आत्मनं सिद्धि के रूप में भारतीय ज्ञान परम्परा की विशिष्टता को उजागर करते हुए अन्य अंतरराष्ट्रीय परम्पराओं से इसकी श्रेष्ठता को विवेचित किया। भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक दर्शनशास्त्र विभाग के डॉ नरेन्द्र कुमार बौद्ध, डॉ अर्चना वर्मा एवं डॉ देवस्मिता चक्रवर्ती थे। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अथर्व मिश्रा, वैष्णवी राठौर, मुस्कान कौरव, द्वितीय स्थान आलोकदेव पाण्डेय, तृतीय स्थान पर सौम्या शर्मा, प्रियांशी राठौर एवं अमित तिवारी रहे। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में राजनीति एवं लोकप्रशासन विभाग से डॉ दिवाकर कुमार झा एवं डॉ निकिता जायसवाल शामिल हुए।

विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में युवा दिवस का आयोजन

स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपने स्वाभिमान की तरह जीवन में उतारना चाहिए: आचार्य प्रो.ए नटराजू

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में स्वामी विवेकानन्द जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अर्चना वर्मा ने कार्यक्रम में शामिल सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की संरचना का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के विचारों को आत्मसात करने और उन्हें अपने चरित्र का हिस्सा बनाने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने सभी आगंतुको को युवा दिवस की बधाई दी एवं अपने विचार प्रस्तुत किए।. उन्होंने विवेकानन्द के विचारों में आध्यात्म और समाज के समन्वय पर बल दिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सेन्टर फॉर फिलॉसफी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. ए. नटराजू, ने स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों और मूल ग्रन्थों के अध्ययन की महत्ता पर चर्चा की। उन्होंने सभी को विवेकानन्द के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया. कार्यक्रम के दौरान अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने 'आत्मनं सिद्धि' के रूप में भारतीय ज्ञान-परम्परा की विशिष्टता को उजागर करते हुए अन्य अंतराष्ट्रीय परम्पराओं से इसकी श्रेष्ठता को विवेचित किया। प्रो. शर्मा ने कहा कि हमें स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपने स्वाभिमान की तरह जीवन में उतारना चाहिए। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सहसंयोजक डॉ. देवस्मिता चक्रवर्ती ने स्वामी विवेकानन्द के नारी सशक्तिकरण के दृष्टिकोण पर चर्चा की। भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक दर्शनशास्त्र विभाग के डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध, डॉ. अर्चना वर्मा एवं डॉ. देवस्मिता चक्रवर्ती थे। इस अवसर पर विभाग में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। प्रथम स्थान पर अथर्व मिश्रा, वैष्णवी राठौर, मुस्कान कौरव, द्वितीय स्थान आलोकदेव पाण्डेय, तृतीय स्थान पर सौम्या शर्मा, प्रियांशी राठौर एवं अमित तिवारी रहे। कार्यक्रम संचालन दर्शनशास्त्र विभाग के शोधार्थी अक्षरा सिंघई, विभा पाण्डेय, शिव कुमार यादव एवं गौरव कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में राजनीति एवं लोकप्रशासन विभाग से डॉ. दिवाकर, कुमार झा एवं डॉ. निकिता जायसवाल शामिल हुए।

कम्युनिटी कॉलेज को मिलेगा नया स्वरुप, उत्पादों के प्रदर्शन व बिक्री के लिए होगा कांउटर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के कम्युनिटी कॉलेज के भवन का उद्घाटन कुलाधिपति केएल बेरबाल, जीपीएफ के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। कुलाधिपति ने कहा कि कम्युनिटी कॉलेज बुंदेलखंड क्षेत्र में स्वरोजगार को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कौशल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे विधार्थी शिक्षा के साथ हुनरमंद बने। इस मौके पर डॉ. मार्कंडेय राय ने फैशन वर्कशॉप में विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए प्रोडक्ट देखे तथा विद्यार्थियों के कार्य की सराहना की। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि नव आवंटित भवन में कम्युनिटी कॉलेज को नया स्वरूप देने का कार्य किया जाएगा। फैशन डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिए अत्याधुनिक सिलाई मशीन वर्कशॉप तैयार की जाएगी। इस परिसर में एक कॉमन काउंटर तैयार किया जाएगा। जिसमें फैशन मशरूम, फूड प्रोसेसिंग आदि के कोर्स के विद्यार्थी स्वयं के द्वारा तैयार प्रोडक्ट जैसे डिजाइनर लेहंगा, सूट, साड़ी, हैंडीक्राफ्ट, शो सजावट सहित मशरूम, फूड प्रोडक्ट में अचार, जैली, हनी प्रोडक्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट खाद सहित अन्य सामग्री रखी जाएगी। कॉलेज के नोडल अधिकारी प्रो. एसके काशव ने बताया कि कम्युनिटी कॉलेज वर्तमान में स्किल डेवलपमेंट के 19 कोर्स संचालित कर रहा है। वर्तमान में कॉलेज के पास लगभग 550 से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश है। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. चंदाबेन, प्रो. भागवत, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. शालिनी, डॉ. जीके तिवारी, डॉ. किरण आर्य, डॉ. बबीता यादव, डॉ. आदि मौजूद रहे।

देशबन्धु

कम्युनिटी कॉलेज को मिलेगा नया स्वरुप, उत्पादों के प्रदर्शन व बिक्री के लिए होगा कांउटर

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कम्युनिटी कॉलेज के भवन का उद्घाटन कुलाधिपति केएल बेरबाल, जीपीएफ के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में हुआ। कुलाधिपति ने कहा कि कम्युनिटी कॉलेज बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्वरोजगार को बढावा दे रहा है। वर्तमान समय में कौशल को बढ़ावा दिया जाना चाहिये जिससे विधार्थी शिक्षा के साथ हुनरमंद बने। इस मौके पर डॉ. मार्कंडेय राय ने फैशन वर्कशॉप में विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोडक्ट देखे तथा विद्यार्थियों के कार्य की सराहना की। कम्युनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी प्रो. एसके काशव ने बताया कि कम्युनिटी कॉलेज द्वारा वर्तमान में स्किल डेवलपमेंट के 19 कोर्स संचालित हो रहे हैं। वर्तमान में कॉलेज के पास लगभग 550 से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश है। उन्होंने अतिथियों को कम्युनिटी कॉलेज के उत्कृष्ट कार्यों एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि नवआवंटित भवन में कम्युनिटी कॉलेज को नया स्वरूप देने का कार्य किया जायेगा। फैशन डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिये अत्याधुनिक सिलाई मशीन वर्कशॉप तैयार की जायेगी। इस परिसर में एक कॉमन कांउटर तैयार किया जायेगा जिसमें फैशन मशरूम, फूड प्रोसेसिंग, वर्मीकम्पोटिंग इत्यादि के कोर्स के विद्यार्थी स्वयं के द्वारा तैयार प्रोडक्ट जैसे डिजाईनर लेहंगा, सूट, साड़ी, हैंडीक्राफ्ट, शो सजावट सहित मशरूम, फूड प्रोडक्ट में अचार, जैली, हनी प्रोडक्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट खाद सहित अन्य सामग्री रखी जायेगी। प्रोडक्ट बिक्री के बाद राशि विधार्थियों के खाते में जायेगी। कॉमन कांउटर सुविधा विश्वविद्यालय के समस्त विभाग के विद्यार्थियों के लिये रहेगा। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का मौका दिया जायेगा। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. चंदाबेन, प्रो. भागवत, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. शालिनी, डॉ. जीके तिवारी आदि मौजूद रहे।

वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार होगी

सागर,आचरण। डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर और ग्लोबल पीस फाउंडेशन इंडिया के बीच विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गये. इस साझेदारी का उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शांति निर्माण और नेतृत्व विकास जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान और प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है. समझौते पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और जीपीएफ इंडिया के चेयरपर्सन डॉ. मार्कंडेय राय ने हस्ताक्षर किए. इसके साथ ही 'शांति और नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम' का शुभारंभ भी किया गया, जो 15 और 16 जनवरी 2025 तक आयोजित हुआ. इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को शांति निर्माण और नेतृत्व कौशल में प्रशिक्षित करना है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. मार्कंडेय राय (जीपीएफ इंडिया, चेयरपर्सन) ने युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए शांति निर्माण के महत्व पर चर्चा की. उन्होंने कहा कि भारत ने हमेशा पूरी दुनिया को दिशा प्रदान की है. मानवीय संकट के समय विश्व हमेशा भारत की तरफ देखता है. भारत की युवा आबादी क्षमता से परिपूर्ण है और उसे आगे बढ़कर नेतृत्वकारी भूमिका में होना चाहिए. उन्होंने कहा कि भारत शांतिप्रिय देश है और भारतीय दार्शनिकों, विचारकों और चिंतकों ने हमेशा पूरे विश्व में शान्ति का ही सन्देश दिया. उन्होंने कहा कि शांति, सहयोग एवं समन्वय की भारतीय दृष्टि से ही वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार होगी।

डॉ. सुरेंद्र पाठक (वरिष्ठ शिक्षाविद) ने नेतृत्व विकास के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया. कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों में शांति निर्माण के मूल सिद्धांतों पर चर्चा, नेतृत्व विकास और सामुदायिक सहयोग आदि पर चर्चा रही. दूसरे दिन का सत्र इंटरएक्टिव सेशन था जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और दिए गए विषय पर अपने सकारात्मक विचार रखे. प्रो. वंदना सोनी (कार्यक्रम समन्वयक) ने कार्यक्रम के सुचारू संचालन और समन्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया. सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किये गये।

विश्वविद्यालय- सीबीसीएस परीक्षा केन्द्रों का कुलपति ने किया निरीक्षण

परिहार गर्जना न्यूज। सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, में सत्र 2024-25 की सीबीसीएस यूजी एवं पीजी की परीक्षाएं आयोजित की जा रही है. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने परिसर में बनाए गए केन्द्रों महर्षि कणाद भवन एवं आचार्य शंकर भवन का निरीक्षण किया. उन्होंने परीक्षा केन्द्रो पर पहुँचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और सुविधाओं का जायजा लिया. दोनों केन्द्रों पर विभिन्न विषयों की परीक्षाएं आयोजित की जा रही हैं. निरीक्षण के दौरान परीक्षा समन्वयक प्रो. रणवीर सिंह, प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस. पी. गादेवार एवं समस्त शिक्षक समन्वयक मौजूद रहे.

दर्शनशास्त्र विभाग में 'वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

सागर,आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में 'वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का संचालन दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने किया. इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. मार्कंडेय राय, कुलाधिपति, इन्दिरा गाँधी टेक्नोलॉजिकल एण्ड मेडिकल साइन्सेज विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश रहे. डॉ. राय ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न संस्कृतियों में इसकी विद्यमानता बतायी। विशेष अतिथि डॉ. सुरेन्द्र पाठक, वसुधैव कुटुम्बकम् पुस्तक के सलाहकार और प्रधान अन्वेषक ने 'वसुधैव कुटुम्बकम् द वे फॉरवर्ड फॉर ग्लोबल पीस' पुस्तक की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला. धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने किया. इस आयोजन में दर्शनशास्त्र विभाग एवं अन्य विभागों के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी शामिल हुए।

मंथन विवि के हिंदी विभाग में स्त्री लेखन, चुनौतियां एवं भविष्य विषय पर व्याख्यान व कथा संवाद का आयोजन

स्त्री किचन से कलम तक की यात्रा में नए आयाम रच रही : डा. शरद

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में स्त्री लेखन चुनौतियां एवं भविष्य विषय पर व्याख्यान व कथा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण प्रो. राजेंद्र यादव ने देते हुए सागर के साहित्यकारों को याद किया। डा. संजय नाइनवाड़ द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय दिया गया। मुख्य अतिथि हिंदी कथाकार और आलोचक डा. शरद सिंह ने स्त्री की चुनौतियों के बारे में कहा कि किसी भी स्त्री की किचन से कलम तक की यात्रा चुनौती भरी रहती है। उन्होंने कहा कि स्त्री को स्त्री लेखिका के रूप में देखा जाए न कि केवल स्त्री के रूप में। भाषाई लिंगबोध के भेदभाव का भी

कार्यक्रम को संबोधित करतीं हुई डा. शरद सिंह। ● नवदुनिया

उन्होंने जिक्र करते हुए कहा कि समग्रता, समर्पण और विषय का पूरा ज्ञान साहित्य लेखन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने दमयंती आज भी उदास है नामक कहानी का पाठ किया।

बुंदेलखंड के साहित्य पर रखे विचार : विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भाषा अध्ययनशाला की डीन प्रो. चंदा बैन ने बुंदेलखण्ड के साहित्य के साथ-हिंदी में राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त द्वारा लिखित साहित्य पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में बतौर अध्यक्ष उपस्थित हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी में चल रहे स्त्री लेखन और स्वानुभुति व परानुभूति पर बात रखी। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन डा. हिमांशु कुमार ने किया। आभार डा. अरविन्द कुमार ने दिया। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के शिक्षक डा. अफ़रोज़ बेगम, डा. अवधेश कुमार, डा. लक्ष्मी पाण्डेय, डा. सुजाता मिश्र, प्रदीप सौंर, इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे, डा. शशिकुमार सिंह, डा. रामहेत गौतम, डा. किरण आर्या, डा. बबलू रे, डा. अरविन्द गौतम, माधव चंद्र, गजाधर सागर, टीकाराम त्रिपाठी, डा. श्याम मनोहर सिरोठिया उपस्थित थे।

स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 16 जनवरी 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 28 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरूआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य

वक्ता डॉ. पुष्पल घोष (प्रभारी शिक्षक, एसईएम) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में एसईएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी।

हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी, सीएआर द्वारा एसईएम उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से नमूना तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक समूह ने नमूना तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा एसईएम पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार और अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया।

स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप पर हैंड्स ऑन कार्यशाला हुई

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसइएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 28 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. पुष्पल घोष ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में एसइएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी। इस मौके पर रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार और अरविंद चडार की आदि मौजूद रहे।

फार्मास्युटिकल साइंस विभाग के प्रियांशु नेमा और शिफा खान को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मान

ज्योति शर्मा,भास्कर केसरी, सागर।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मास्युटिकल साइंस विभाग के शोधार्थी प्रियांशु नेमा और एम.फार्मा की छात्रा शिफा खान ने अपने उत्कृष्ट शोध कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

शोधार्थी प्रियांशु नेमा को 20-21 दिसंबर 2024 को विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में आयोजित एपीपी 13वीं वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ शोधार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उनके शोध कार्य पायरिमिडीन डेरिवेटिव्स पर व्यापक संगणकीय अध्ययन= जीपीआर119 एगोनिस्ट के रूप में एनआईडीडीएम के खिलाफ यौगिकों के विकास के लिए प्रदान किया गया। प्रियांशु नेमा, देवरी, सागर, मध्य प्रदेश के निवासी हैं।

इसी सम्मेलन में एम.फार्मा की छात्रा शिफा खान को उनके शोध कार्य थायोसेमिकारबाज़ोन इंडोल डेरिवेटिव्स पर व्यापक संगणकीय अध्ययन= कैंसर-रोधी यौगिकों के रूप में के लिए सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया।

दोनों विद्यार्थी मेडिसिनल कैमिस्ट्री में प्रो. सुशील कुमार काशव के मार्गदर्शन में शोध कर रहे हैं।

यह कार्यक्रम एपीपी मध्य प्रदेश राज्य शाखा और एपीपी ऑस्ट्रेलियन अंतराष्ट्रीय शाखा के सहयोग से एपीपी मॉलफार्म डिवीजन और विजया इंस्टीट्[illegible]फ फार्मास्युटिकल साइंसेज फॉर विमेन, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) के सहयोग में संपन्न हुआ।

छात्रों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलाधिपति के.एल. बेरवाल (आई.पी.एस.) और डॉ. मार्कंडेय राय (चेयरमैन, ग्लोबल पीस फाउंडेशन, इंडिया), विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश कुमार पाटिल, सभी शिक्षकों, माता-पिता और भाई ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

डॉ. हरिसिंह गौर विवि का 33 वां दीक्षांत समारोह, 20 जनवरी तक पंजीयन

बुंदेली संस्कृति की दिखेगी झलक, सतरंगी पगड़ी में डिग्री लेंगे विद्यार्थी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि में 33 वां दीक्षांत समारोह फरवरी में आयोजित किया जाएगा। समारोह की एक माह पहले से तैयारी शुरू हो गई है। इस वर्ष भी विवि के दीक्षांत समारोह में बुंदेली संस्कृति की झलक दिखाई देगी। डिग्री लेने वाले छात्र सफेद कुर्ता-पयजामा में नजर आएंगे। छात्राएं सफेद रंग का सलवार सूट पहनेंगी। सभी विद्यार्थियों को विवि प्रबंधन सतरंगी पगड़ी और उपर्णी (स्टॉल) देगा।

विवि से मिली जानकारी के अनुसार वर्ष 2023-24 में उत्तीर्ण समस्त नियमित स्नातक, स्नातकोत्तर अभ्यर्थी एवं 29 फरवरी 2024 के उपरांत जिन अभ्यर्थियों ने पीएचडी, डीएससी या डीलिट् की उपाधि अर्जित की हो, ऐसे सभी अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर पंजीयन कराना होगा। पंजीयन 20 जनवरी तक किए जाएंगे।

पंजीयन शुल्क 1 हजार रुपए का ऑनलाइन भुगतान करना होगा। दीक्षांत समारोह में उपाधि ग्रहण करने के लिए पंजीयन कराना अनिवार्य है। इसके लिए छात्र सफेद कुर्ता-पायजामा और छात्राएं सफेद सलवार और कुर्ता पहनेंगी। इस ड्रेस की व्यवस्था उम्मीदवारों को स्वयं करनी होगी। विश्वविद्यालय द्वारा एक उपर्णी (स्टॉल) और बुंदेली सतरंगी पगडी प्रदान की जाएगी।

सागर. विवि में दीक्षांत समारोह आयोजित करने तैयारी हुई शुरू।

कार्यक्रम में शामिल ना होने पर घर पहुंचेगी उपाधि

अनुपस्थिति में उपाधि (डिग्री-इन-एबसेंशिया) को प्राप्त करने के इच्छुक अभ्यर्थियों को 600 रुपए का ऑनलाइन भुगतान कर पंजीयन करना होगा। उनकी उपाधि दीक्षांत समारोह के बाद उनके पते पर स्पीड पोस्ट भेजी जाएगी। मीडिया प्रभारी विवेक जयसवाल ने बताया कि दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर भाग लेने के अभ्यर्थियों के लिए समारोह के लिए आयोजित पूर्वाभ्यास अनिवार्य होगा, जिसकी जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दी जाएगी।

पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

ज्योति शर्मा,भास्कर केसरी, सागर।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 22 जनवरी को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन फार्मास्युटिकल विभाग में किया गया, जिसमें कुल 24 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं। व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. वन्दना सोनी (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी। डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी गई।

हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा पार्टिकल साइज़ एनालाइजर उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ। विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया। सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 04 समूहों में विभाजित किया गया। प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया। प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज़ एनालाइजर तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के रमेश सी. प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार और अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया।

विद्यार्थियों को बताया कि कैसे तैयार की जाए शोध-पत्र की रूपरेखा

कार्यशाला में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए डा. अनिल कुमार तिवारी। ● नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : दर्शनशास्त्र विभाग ने 13 से 17 जनवरी 2025 तक मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन शाला के शोधार्थियों के लिए एक शोध-पत्र लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। डा. अनिल कुमार तिवारी ने बताया कि शोध-पत्र का शीर्षक कैसे निर्धारित करें, शोध-पत्र का सारांश कैसे तैयार किया जाए। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि शोध-पत्र की रूपरेखा कैसे तैयार की जाए, शोध की रिपोर्टिंग के लिए कंप्यूटर का कुशलतापूर्वक उपयोग कैसे करें व संदर्भों और पुस्तक सूची को कैसे उद्धृत किया जाए।

यह सत्र प्रतिदिन दोपहर तीन बजे से शाम 4:30 बजे तक आयोजित किए गए। कार्यशाला में दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, इतिहास, पत्रकारिता, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत एवं अन्य विभागों के 45 शोधार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

विश्वविद्यालय के छात्र शान चौबे राजपथ होने वाली परेड के लिए हुए चयनित

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के इंजीनियरिंग विभाग के छात्र शान चौबे का चयन दिल्ली मे राजपथ पर 26 जनवरी को आयोजित होने वाली गणतंत्र दिवस समारोह की मुख्य परेड के लिये किया गया है। सागर के शान चौबे परेड के साथ साथ गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भी अपनी वाद्य संगीत कला के लिये भी चयनित हुए है। शान की इस कामयाबी पर सागर विश्वविद्यालय की ओर से एवं उनके परिवार की ओर से उनको बधाई दी गई है।

सार्थक शोध के लिए समय प्रबंधन, जिज्ञासा और समर्पित प्रयास जरूरी : प्रो राजपूत

आचरण संवाददाता

सागर। सार्थक शोध के लिए समुचित समय प्रबंधन, रचनाधर्मी जिज्ञासा और ईमानदार समर्पित प्रयास बेहद महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। ये विचार दिये प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने सम्वाद श्रृंखला में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय में सत्र 2023-24 के नवप्रवेशित शोधार्थियों के लिए सम्वाद श्रृंखला का आयोजन किया गया। संवाद श्रृंखला में संकाय अध्यक्ष प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने शोधार्थियों को शोध संबंधी नियमावली एवं बारीकियों की जानकारी देते हुए कहा कि एक अच्छे शोधकर्ता को सदैव सजग और समय का पाबंद रहना चाहिए।

अधिष्ठाता प्रो राजपूत ने कहा कि विषय की प्रकृति और संस्थान के मूल्यों को पहचान कर अकादमिक श्रेष्ठता के लिए आगे बढ़ने की चाह रखने वालों को सफलता जरूर मिलती है। प्रो राजपूत ने कहा कि संवाद से शोध की बारीकियों को समझने में आसानी होती है। कार्यक्रम में शोधार्थियों ने अपनी जिज्ञासाये रखी. संवाद श्रृंखला में समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास के शोधार्थियों ने सहभागिता की. शोधार्थी प्रावीण्या श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया।

पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज एनालाइजर पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

सागर ■ राज न्यूज नेटवर्क

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में बुधवार को उन्नत अनुसंधान केंद्र में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज एनालाइजर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन फार्मास्युटिकल विभाग में किया गया।

जिसमें उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो वन्दना सोनी प्रभारी शिक्षक ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज एनालाइजर तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी। डॉ विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी गई। हैंड्स ऑन सत्र डॉ विवेक कुमार पांडे सीएआर द्वारा पार्टिकल साइज एनालाइजर उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ। विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया। सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 04 समूहों में विभाजित किया गया। प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया। प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा पीसीएस बेस्ड जीटा पोटेंशियल और पार्टिकल साइज एनालाइजर तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के रमेश सी. प्रजापति, डॉ विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साहू, आशीष चढ़ार और अरविंद चढ़ार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया।

हिंदी विभाग के शोधार्थी सुधीर साहू को मिली पी.एच.डी उपाधि

सागर,आचरण। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शोधार्थी सुधीर साहू को पी.एच.डी की उपाधि मिली है। सुधीर साहू ने 'भूमंडलीकरण 21 वीं सदी की लंबी कहानियों का मूल्यांकन' शोध विषय पर अपना शोध कार्य प्रो. चंदा बेन के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है अपने शोध में उन्होंने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि 'भूमंडलीकरण की अवधारणा और स्वरूप को स्पष्ट करते हुए 21वीं सदी की लंबी कहानियों के कथ्य और शिल्प का मूल्यांकन किया गया है।

‘मिजाज की शायरी परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य’

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के साहित्य परिषद हिंदी विभाग द्वारा शहर के प्रसिद्ध शायर अशोक मिजाज की चुनिंदा शायरियों पर गुरुवार को व्यापक परिचर्चा एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी भोपाल के निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने अशोक मिजाज की शायरी को परंपरा और आधुनिकता के सामंजस्य के रूप में रेखांकित किया।

उन्होंने उर्दू की शायरी परंपरा से परिचित कराकर काव्य पाठ करते हुए कहा कि 'मैं अंधेरों में काम आऊंगा, मुझको पहचान लो नजर है तो। मुख्य वक्ता शायर व कवि आदर्श दुबे ने आज का मिजाज पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आज का मिजाज कच्ची नींद के ख्वाब जैसा है। अशोक मिजाज ने उर्दू और हिंदी को जोड़ देने का मिसाली काम किया है।

विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. सुजाता मिश्र ने कहा कि शायरी की खूबी है कि वह ईमानदारी से कही गई बात है। उन्होंने अशोक मिजाज को हिंदी गजल परंपरा का अग्रणी शायर कहा। इस खास मौके पर अशोक मिजाज स्वयं उपस्थित रहे जिन्होंने अपनी लोकप्रिय गजलों और शेरो-शायरी के माध्यम से कार्यक्रम में समा बांधी। अपनी गजलों और शेरों के माध्यम से आज के मिजाज को देखते हुए उन्होंने कहा कि ''सुलखती भीड़ जब बगावत पर उतर आए, कौन कहता है कि तख्ता पलट नहीं सकता। डॉ. संजय नाइनवाड ने कहा कि छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्येतर गतिविधियां बहुत आवश्यक हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दिया और संरक्षक के रूप में प्रो. चंदा बेन उपस्थित रहीं।

इस दौरान डॉ. हिमांशु कुमार, गजाधर सागर, पीआर मलैया, मानिक देव ठाकुर, महबूब ताज, वीरेंद्र प्रधान, टीकाराम त्रिपाठी, अरुण दुबे, अरविंद कुमार, अफरोज बेगम, शशि सिंह, माधव चंद्रा, राजकुमार तिवारी और प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से सुमन और नम्रता तथा हिंदी संस्कृत विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

मप्र के पहले मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल और सागर विवि के संस्थापक डॉ. हरिसिंह गौर की विवि परिसर में एक मीटर के फासले से बनी है समाधि, दोनों का संविधान निर्माण में रहा विशेष योगदान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. बुंदेलखंड एक ऐसी जगह है, जहां तब विश्वविद्यालय की स्थापना हो गई थी, जब देश आजाद भी नहीं हुआ था। यहां मप्र के पहले मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल और सागर विवि के संस्थापक डॉ. हरिसिंह गौर की विवि परिसर में एक मीटर के फासले से समाधि भी बनी हुई है।

मप्र जब अस्तित्व में ही नहीं था, तब बुंदेलखंड के सपूत डॉ. सर हरिसिंह गौर ने अपने जीवन भर की जमा पूंजी से सागर में विश्वविद्यालय की स्थापना की। विश्वविद्यालय बनाने के लिए डॉ. हरिसिंह गौर के बाल सखा मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल का बड़ा सहयोग रहा। पं. रविशंकर शुक्ल विवि के पहले कुलाधिपति बने और डॉ. हरिसिंह गौर पहले कुलपति। दोनों ही लोगों का संविधान निर्माण में भी विशेष योगदान रहा। यही वजह है कि विवि परिसर में डॉ. हरिसिंह गौर और पं. रविशंकर शुक्ल का समाधि स्थल करीब एक मीटर के फासले से बनाया गया। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुरेश आचार्य ने बताया कि जब मध्यप्रदेश नहीं था, प्रदेश का नाम मध्यभारत सीपी बरार था, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री (तब मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री कहते थे) पं. रविशंकर शुक्ल के हस्तक्षेप के बाद 18 जुलाई 1946 को सागर में विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। डॉ. गौर उसके कुलपति बने और पदेन कुलाधिपति बने पं. रविशंकर शुक्ल।

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि परिसर में एक मीटर के फासले से बनी दोनों की समाधि।

यहां दो बातें उल्लेखनीय हैं

पहली यह कि सागर पं. शुक्ल की भी जन्मभूमि है और दूसरी यह कि वे 1923 में नागपुर विश्वविद्यालय के पहले कुलपति डॉ. गौर बने थे।

संविधान निर्मात्री सभा के रहे सदस्य

वर्ष 1946 को भारतीय संविधान सभा का गठन हुआ इसके डॉ. गौर एक प्रमुख सदस्य थे। भारतीय संविधान के निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। रायपुर जिला परिषद के वे दस साल तक सचिव रहे। वहीं अविभाजित मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल भी संविधान सभा के सदस्य थे। संविधान के निर्माण के दौरान हिंदी को राजभाषा का दर्जा और शिक्षा में राज्यों को हस्तक्षेप का अधिकार दिलाने में प्रमुख योगदान रहा है।

गौरवशाली रहा सागर का इतिहास

सागर से भारतीय संविधान निर्मात्री सभी के तीन सदस्य रहे हैं। भारतीय संविधान की मूल प्रति पर स्व-हस्ताक्षर अंकित हैं। यह सागर के लिए गौरव की बात है। विश्वविद्यालय में महान दानवीर डॉ. हरिसिंह गौर और मप्र के पहले मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल की समाधि स्थल भी एक ही स्थान पर बनी हुई है।

प्रो. बीके श्रीवास्तव, इतिहासकार

सुबह सवेरे
A Daily News Magazine
26 Jan 2025 - Page 2
इंदौर ■ रविवार, 26 जनवरी 2025

गणतंत्र दिवस

सभ्यता, एकता और परंपरा का प्रतीक हमारा भारत

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलपति, डॉ हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

‘एक राष्ट्र एक नाम भारत’ के संकल्प को लेकर हमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय गौरव, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को राष्ट्रीय अखंडता के महत्व के बारे में बताना चाहिए। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देना चाहिए, राष्ट्रीय त्योहारों जैसे कि स्वतंत्रता दिवस और गणत्रंत दिवस का आयोजन करना चाहिए ताकि लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व को समझ सकें।

हमारे देश का प्राचीन नाम भारत है। भारत का शाब्दिक अर्थ होता है ज्ञान में रत (प्रवृत)। भारत दरअसल भारतवर्ष का संक्षिप्त रूप है जिसका उपयोग स्थानीय धर्मों के साहित्य में व्यापक रूप से किया जाता है। भारतवर्ष शब्द भारत नामक वैदिक जनजाति के नाम से लिया गया है जिसका उल्लेख ऋग्वेद में आर्यावर्त के प्रमुख लोगों में से एक के रूप में किया गया है। 1949 में संविधान सभा द्वारा भारत गणराज्य के आधिकारिक नाम के रूप में अपनाया गया था। यह शब्द हमारे इतिहास और संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

भारत नाम प्रयोग करते ही हम भारत वासियों में ज्ञान के सागर का देश होने का बोध होता है। परन्तु कुछ लोग इसे इंडिया अथवा हिंदुस्तान के नाम से भी पुकारते हैं। भारत की एकता और अखंडता को यदि हमें प्रतिबिंबित करना है तो एक राष्ट्र, एक नाम, भारत से ही पुकारना चाहिए। यह हमें याद दिलाता है कि भारत एक विविध और बहुसांस्कृतिक देश होने के साथ ही, हम सभी एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं।

एक नाम भारत हमें स्मरण दिलाता है कि भारत एक एकल और अखंड राष्ट्र है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोग रहते हैं। यह विचार हमें अपने राष्ट्र के गौरव और समृद्धि की याद दिलाता है और हमें सामाजिक संरक्षण और एकता की ओर बढ़ने के लिए, प्रेरित करता है।

एक राष्ट्र एक नाम भारत के संकल्प को लेकर हमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय गौरव, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को राष्ट्रीय अखंडता के महत्व के बारे में बताना चाहिए। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देना चाहिए, राष्ट्रीय त्योहारों जैसे कि स्वतंत्रता दिवस और गणत्रंत दिवस का आयोजन करना चाहिए ताकि लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व को समझ सकें। हमें मीडिया का उपयोग करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व के बारे में लोगों को अवगत कराना चाहिए तभी हम सही मायने में भारत के नाम को सार्थक कर सकेंगे।

एक नाम से बुलाने से राष्ट्र की पहचान और सम्मान में वृद्धि होती है। इसके अलावा, यह विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद करता है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक मजबूत और एकीकृत इकाई के रूप में प्रस्तुत करता है। एक नाम से बुलाने से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद मिलती है, विभिन्न समुदायों के बीच समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है, राष्ट्रीय गौरव, गर्व और आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। इतना ही नहीं, यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली इकाई के रूप में भी प्रस्तुत करता है।

यदि हमें एकता का प्रतीक बनना है तो हमे जागना होगा और देश की जनता को भी जगाना होगा। ऐसा करने के लिए हम सोशल मीडिया पर अभियान चलाकर, हस्ताक्षर अभियान चलाकर, संगोष्ठियां, परिचर्चा का आयोजन करके, सब को एकजुट होकर व्यापक रूप से ‘भारत’ को प्रचलित लेने का संकल्प लेना होगा। हमारी सभ्यता, एकता और परंपरा का प्रतीक है भारत।

गौर प्रांगण में गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया

समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए शिक्षा का उपयोग करें विद्यार्थी: कुलपति

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के गौर प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस धूमधाम से उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान हुआ और कुलपति ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने राष्ट्रीय-पर्व गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुए कहा कि 26 जनवरी का दिन हमारे लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है। इसी दिन हमारे देश ने एक राष्ट्र के रूप में अपने महान संविधान को अंगीकार कर उन्नत भविष्य की आधारशिला रखी थी और इसी संविधान ने हमें एक आजाद एवं सम्प्रभु राष्ट्र के सम्मानित नागरिक होने का अधिकार और गरिमा प्रदान की है। उन्होंने विश्वविद्यालय में हो रहे अकादमिक नवाचारों और उपलब्धियों को साझा करते हुए कहा कि हमारा विश्वविद्यालय अपने अकादमिक गौरव में निरन्तर श्रीवृद्धि कर रहा है और हम एक श्रेष्ठतम शैक्षिक संस्थान के रूप में अपनी अभिनव उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। आज हमारा विश्वविद्यालय बड़े स्तर पर शैक्षिक नवाचार, प्रशासनिक दक्षता एवं अकादमिक दृढ़ता के साथ कार्य कर रहा है। पारम्परिक ज्ञान, भारतीय-बोध के साथ ही विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हम वैश्विक स्तर की तकनीकी से सक्षम, संवेदनशील और चेतनावान नागरिक निर्मित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के शोधार्थियों एवं शिक्षकों के श्रेष्ठ प्रकाशनों और अकादमिक सम्मानों के साथ विश्वविद्यालय की अकादमिक गरिमा राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित की जा रही है। समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

गौर भवन में भी हुआ ध्वजारोहण, एनसीसी कैडेट्स ने दी सलामी

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर भवन में भी ध्वजारोहण किया। एनसीसी कैडेट्स ने कुलपति को सलामी दी।

विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए देशभक्ति गीत

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने देश भक्ति आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अवधेश तोमर, डॉ. राहुल स्वर्णकार एवं सांस्कृतिक समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने किया।

सभ्यता-एकता-परंपरा का प्रतीक हमारा भारत

● प्रो. नीलिमा गुप्ता

आयाम

हमारे देश का प्राचीन नाम भारत है। भारत का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान में रत यानी प्रवृत। भारत भारतवर्ष का संक्षिप्त रूप है जिसका प्रयोग स्थानीय धर्मों के साहित्य में व्यापक रूप से किया जाता है। भारतवर्ष शब्द भारत नामक वैदिक जनजाति से लिया गया है जिसका उल्लेख ऋग्वेद में आर्यावर्त के प्रमुख लोगों में से एक के रूप में किया गया है। यह साल 1949 में संविधान सभा द्वारा भारत गणराज्य के आधिकारिक नाम के रूप में अपनाया गया था। यह शब्द हमारे इतिहास और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। भारत नाम प्रयोग करते ही हम भारतवासियों में ज्ञान के सागर का देश होने का बोध होता है। परंतु कुछ लोग इसे इंडिया अथवा हिंदुस्तान के नाम से भी पुकारते हैं। भारत की एकता और अखंडता को यदि हमें प्रतिबिंबित करना है तो एक राष्ट्र-एक नाम भारत से ही पुकारना चाहिए। यह हमें याद दिलाता है कि भारत के एक विविध और बहुसांस्कृतिक देश होने के साथ हम सब एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं। एक नाम भारत हमें स्मरण दिलाता है कि भारत एक एकल और अखंड राष्ट्र है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोग रहते हैं। यह विचार हमें अपने राष्ट्र के गौरव और समृद्धि की याद दिलाता है और हमें सामाजिक संरक्षण और एकता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। एक राष्ट्र-एक नाम भारत के संकल्प को लेकर हमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय गौरव, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को राष्ट्रीय अखंडता के महत्व के बारे में बताना चाहिए। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देना चाहिए। राष्ट्रीय त्यौहारों मसलन स्वतंत्रता दिवस और गणत्रंत दिवस का आयोजन करना चाहिए ताकि लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व को समझ सकें। हमें मीडिया का उपयोग करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व के बारे में लोगों को अवगत कराना चाहिए, तभी हम सही मायने में भारत के नाम को सार्थक कर सकेंगे। एक नाम से बुलाने से राष्ट्र की पहचान और सम्मान में वृद्धि होती है। इसके अलावा यह विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद करता है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक मजबूत और एकीकृत इकाई के रूप में प्रस्तुत करता है। एक नाम से बुलाने से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद मिलती है, यह विभिन्न समुदायों के बीच समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है और राष्ट्रीय गौरव, गर्व और आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। इतना ही नहीं, यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली इकाई के रूप में भी प्रस्तुत करता है। यदि हमें एकता का प्रतीक बनना है तो हमें जागना होगा और देश की जनता को भी जगाना होगा। ऐसा करने के लिए हम सोशल मीडिया पर अभियान चलाकर, हस्ताक्षर अभियान चलाकर, संगोष्ठियां व परिचर्चा का आयोजन करके सबको एकजुट होकर व्यापक रूप से भारत नाम को प्रचलित करने का संकल्प लेना होगा। हमारी सभ्यता, एकता और परंपरा का प्रतीक है- भारत।

(लेखिका सागर में डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति हैं)

---

26 जनवरी हमारे लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है

डाक्टर हरीसिंह गौर विवि में विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। ● नवदुनिया

सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विवि के गौर प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि 26 जनवरी का दिन हमारे लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है। हम आज के दिन को लोकतांत्रिक आदर्शों के महापर्व के रूप में देखते और मनाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं है, यह हमारे देश के मूल्यों, सिद्धांतों, और आदर्शों का प्रतिबिंब है। गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विवि के अभिमंच सभागार में संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने देश भक्ति आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संयोजन डा. अवधेश तोमर, डा. राहुल स्वर्णकार एवं सांस्कृतिक समन्वयक डा. राकेश सोनी ने किया। कुलपति ने गौर भवन में भी ध्वजारोहण किया, जिसके बाद एनसीसी कैडेट्स ने कुलपति को सलामी दी।

एरिया न्यूज

संविधान सिर्फ दस्तावेज नहीं, यह हमारे आदर्शों का प्रतिबिंब

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय परिसर में गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने कहा कि 26 जनवरी का दिन हमारे लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है, इसी दिन हमारे देश ने एक राष्ट्र के रूप में अपने महान संविधान को अंगीकार कर उन्नत भविष्य की आधारशिला रखी थी और इसी संविधान ने हमें एक आजाद व सम्प्रभु राष्ट्र के सम्मानित नागरिक होने का अधिकार और गरिमा प्रदान की है। हम आज के दिन को लोकतांत्रिक आदर्शों के महापर्व के रूप में देखते और मनाते आए हैं, हमारा संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं है।

एरिया न्यूज

भूविज्ञान विभाग को स्थापित करने में प्रो. वेस्ट का रहा है योगदान

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के व्यवहारिक भूविज्ञान विभाग ने प्रो. डब्ल्यूडी वेस्ट का 124 वां जन्म दिवस मनाया। मुख्य अतिथि प्रो. वाईएस ठाकुर ने बताया कि प्रो. वेस्ट वर्ष 1956 में इस विभाग की स्थापना की थी। इससे पूर्व प्रो. वेस्ट भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के महानिदेशक थे। विभाग के अध्यक्ष प्रो. एके सिंह ने बताया कि प्रो. वेस्ट का इस विभाग को बनाने में अतुलनीय योगदान रहा और हम सभी लोग मिलकर इस परंपरा को आगे ले जाएंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय भटिंडा, पंजाब के वर्तमान कुलपति प्रो. आरपी तिवारी को प्रतिष्ठित प्रो. वेस्ट ओरेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर भूविज्ञान विभाग के दो सेवानिवृत्त शिक्षकों प्रो. अरूण कुमार शांडिल्य एवं प्रो. आरके त्रिवेदी को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. वंदना सोनी, प्रो. पीके कठल, प्रो. एच थॉमस, प्रो. आरके रावत, प्रो. एसएच आदिल एवं प्रो. डीसी मेश्राम आदि मौजूद रहे।

निडरता, निष्पक्षता और राष्ट्र के प्रति समर्पण पत्रकारिता के आधार स्तंभ हैं

■ विवि के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में भारतीय समाचार पत्र दिवस पर हुआ विचार गोष्ठी का आयोजन

दबंग बुंदेलखंड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में भारतीय समाचार पत्र दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी यात्रा बड़ी ही संघर्षपूर्ण, मार्मिक एवं उद्देश्यपरक रही है जिसका स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संविधान में भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोत्तम माना गया है। पत्रकारिता के प्रमुख आधार स्तंभ निडरता और निष्पक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में जीवन पर्यंत शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय शर्मा ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आज अखबारों की लगातार बढ़ती संख्या जहां एक और सुखद अनुभूति प्रदान करती है तो वहीं अखबारों में बोलने और विचारों की कमी हमें चिंतन करने पर भी मजबूर कर देती है। देश मे साक्षरता तो बढ़ी लेकिन क्रिटिकल साक्षरता का विकास जिस तरह से अखबारों के माध्यम से होना चाहिए था उस तरह से नहीं हुआ. इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। स्वागत वक्तव्य देते हुए पत्रकारिता विभाग के डॉ. विवेक जायसवाल ने भारत में पत्रकारिता के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला और भारतीय पत्रकारिता के इतिहास के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बंगाल गजट की शुरूआत से लेकर प्रिंटिंग प्रेस और तत्कालीन समय के प्रेस विरोधी नीतियों को चर्चा में रखा। उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में आज के दौर की तरह जनसंचार और पत्रकारिता के इतने विविध और प्रभावी माध्यम नहीं थे सिर्फ प्रिंट मीडिया के रूप में अखबार ही एक मात्र माध्यम हुआ करता था। आजादी के आंदोलनों में भाषाई पत्रकारिता का बड़ा अहम योगदान माना जाता है जिसने एकता और अखंडता की नजीर पेश की। मुख्य वक्ता के रूप में पत्रकारिता विभाग के डॉ. अलीम अहमद खान ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास को गहनता से समझाया। उन्होंने बुंदेलखंड की हिंदी पत्रकारिता को प्रमुख रूप से रेखांकित करते हुए बताया कि किस तरह पत्रकारिता हर दौर में प्रसांगिक रही है। चाहे आजादी के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार और शोषण रहा हो या उनकी दमनकारी नीतियों के खिलाफ मुखर आवाज बनना हो, पत्रकारिता ने हमेशा अपने संघर्ष से सच को बुलंद किया। वहीं उन्होंने तेजी से बदलती तकनीक पर भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज पत्रकारिता के विविध स्वरूप हम सबके सामने है जिसमें अनेकानेक रोजगार की संभावनाएं व्याप्त है। आज संचार और पत्रकारिता का दायरा असीमित रूप ले चुका है जिसमें पेशेवरों की भारी मांग देखी जा रही है फिर चाहे मुख्यधारा के मीडिया की बात हो या फिर सोशल और डिजिटल मीडिया. प्रसार भारती से लेकर आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी स्ट्रिंगर , रिपोर्टर से लेकर एंकर, प्रोड्यूसर और अनुभवी संपादकों एवं तकनीकी दक्ष लोगो की वृहद स्तर पर मांग हैं. हमें जरूरत है अपने आपको काबिल बनाने की और समय के साथ अपनी स्किल्स को अपग्रेड करनी है। जिसके बाद इस क्षेत्र में अपार संभावनाओं के द्वार स्वतः खुल जाते हैं। इस अवसर पर विभाग के शोधार्थी दीपक ने कहा कि संविधान ने हमे आर्टिकल 19(1)(ए) के तहत वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है जो एक आम नागरिक से लेकर पत्रकार को भी अपनी बात रखने की आजादी देता है। विभाग के शोधार्थी दिलीप चौरसिया ने कहा कि कंटेंट और क्रेडिबिलिटी हर दौर में प्रसांगिक रही है जो आज भी पत्रकारिता के लिये चुनौती बनी हुई है। विभाग के स्नातकोत्तर छात्र राजेंद्र विश्वकर्मा ने रोचक अंदाज में कविता के माध्यम से पत्रकारिता के उद्भव और उसके विकास की गाथा को प्रस्तुत किया। जिसकी सभी ने सराहना की। इस मौके पर विभाग के अन्य अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे. कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी अनुष्का तिवारी ने किया। आभार ज्ञापन शोधार्थी सलोनी शर्मा ने किया।

निडरता, निष्पक्षता और राष्ट्र के प्रति समर्पण पत्रकारिता के आधार स्तंभ हैं

पत्रकारिता के प्रमुख आधार 4 स्तंभ हैं निडरता, निष्पक्षता अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राष्ट्र के प्रति समर्पण होना

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में भारतीय समाचार पत्र दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी यात्रा बड़ी ही संघर्षपूर्ण, मार्मिक एवं उद्देश्यपरक रही है जिसका स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संविधान में भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोत्तम माना गया है।

पत्रकारिता के प्रमुख आधार स्तंभ निडरता और निष्पक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण है। विशिष्ट अतिथि के रूप में जीवन पर्यंत शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय शर्मा ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आज अखबारों की लगातार बढ़ती संख्या जहां एक और सुखद अनुभूति प्रदान करती है तो वहीं अखबारों में बोलने और विचारों की कमी हमें चिंतन करने पर भी मजबूर कर देती है। देश मे साक्षरता तो बढ़ी लेकिन क्रिटिकल साक्षरता का विकास जिस तरह से अखबारों के माध्यम से होना चाहिए था उस तरह से नहीं हुआ। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

स्वागत वक्तव्य देते हुए पत्रकारिता विभाग के डॉ. विवेक जायसवाल ने भारत में पत्रकारिता के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला और भारतीय पत्रकारिता के इतिहास के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बंगाल गजट की शुरुआत से लेकर प्रिंटिंग प्रेस और तत्कालीन समय के प्रेस विरोधी नीतियों को चर्चा में रखा। उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में आज के दौर की तरह जनसंचार और पत्रकारिता के इतने विविध और प्रभावी माध्यम नहीं थे। सिर्फ प्रिंट मीडिया के रूप में अखबार ही एक मात्र माध्यम हुआ करता था। आज़ादी के आंदोलनों में भाषाई पत्रकारिता का बड़ा अहम योगदान माना जाता है जिसने एकता और अखंडता की नजीर पेश की।

मुख्य वक्ता के रूप में पत्रकारिता विभाग के डॉ. अलीम अहमद खान ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास को गहनता से समझाया। उन्होंने बुंदेलखंड की हिंदी पत्रकारिता को प्रमुख रूप से रेखांकित करते हुए बताया कि किस तरह पत्रकारिता हर दौर में प्रसांगिक रही है। चाहे आज़ादी के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार और शोषण रहा हो या उनकी दमनकारी नीतियों के खिलाफ मुखर आवाज बनना हो, पत्रकारिता ने हमेशा अपने संघर्ष से सच को बुलंद किया।

उन्होंने तेजी से बदलती तकनीक पर भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज पत्रकारिता के विविध स्वरूप हम सबके सामने है जिसमें अनेकानेक रोजगार की संभावनाएं व्याप्त है। आज संचार और पत्रकारिता का दायरा असीमित रूप ले चुका है जिसमें पेशेवरों की भारी मांग देखी जा रही है फिर चाहे मुख्यधारा के मीडिया की बात हो या फिर सोशल और डिजिटल मीडिया। प्रसार भारती से लेकर आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी स्ट्रिंगर, रिपोर्टर से लेकर एंकर, प्रोड्यूसर और अनुभवी संपादकों एवं तकनीकी दक्ष लोगो की वृहद स्तर पर मांग हैं। हमें जरूरत है अपने आपको काबिल बनाने की और समय के साथ अपनी स्किल्स को अपग्रेड करनी है। जिसके बाद इस क्षेत्र में अपार संभावनाओं के द्वार स्वतः खुल जाते हैं।

विवि में प्रो. डब्ल्यूडी वेस्ट का जन्मदिवस मनाया

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के व्यवहारिक भूविज्ञान विभाग द्वारा प्रो.डब्ल्यूडी वेस्ट का 124वां जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रो.वेस्ट ने सन् 1956 में इस विभाग की स्थापना की इससे पूर्व प्रो.वेस्ट भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के महानिदेशक थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.वाईएस ठाकुर थे। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलन तथा अतिथियों के सत्कार से हुई। विभाग के अध्यक्ष प्रो.एके सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा स्वागत उद्बोधन में कहा कि प्रो.वेस्ट का इस विभाग को बनाने में अतुलनीय योगदान रहा और हम सभी लोग मिलकर इस परंपरा को आगे ले जाएंगे।

प्रो.कठल ने प्रो.वेस्ट के जीवन के बारे में विस्तार पूर्वक सभी को अवगत कराया।

इस विभाग को स्थापित करने पर उनके विशेष योगदान पर प्रकाश डाला तथा सुझाव दिया कि प्रो.वेस्ट की जीवनी तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में एक बुकलेट तैयार की जाये जो नवआगंतुक छात्रों को बुकलेट दी जाये जिससे वे इस महान भूवैज्ञानिक के बारे में जान सके एवं उनके द्वारा स्थापित परंपरा का निर्वहन कर सकें।

ग्रामीण विकास अध्ययन में रोजगार की संभावनाओं पर संवाद कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग के शिक्षकों के द्वारा एक संवाद कार्यक्रम पं. दीनदयाल उपाध्याय कला एवं वाणिज्य (अग्रणी) महाविद्यालय एवं शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में आयोजित किया गया। स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम में जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. योगेश कुमार पाल ने संबोधित करते हुए ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उद्यमिता एवं रोजगार के अवसरों के संबंध में विद्यार्थियों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि ग्रामीण अर्थशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, शिक्षा आदि को ग्रामीण विकास से जोड़कर ग्रामीण भारत के विकास में योगदान किया जा सकता है। आत्मनिर्भर भारत एवं विकसित भारत की संकल्पना को भारत के गांवों को सशक्त करके ही किया जा सकता है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के युग में गाँवों को उनसे जोड़ने की जरूरत है। इस पहल में विश्वविद्यालय के द्वारा संचालित स्नातकोत्तर स्तर पर ग्रामीण विकास के पाठ्यक्रम का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

डॉ. पाल ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के द्वारा आगामी संयुक्त विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा-2025 में इस विषय में प्रवेश लेने के लिए विधार्थियों को प्रोत्साहित किया एवं एम.ए. ग्रामीण विकास के लिए आयोजित होने वाली प्रवेश परीक्षा के संदर्भ में प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान किया गया। पं. दीनदयाल उपाध्याय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में डॉ. सुनील साहू एवं डॉ. राणा सिंह कुंजर एवं शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। कार्यक्रम में डॉ. संजय शर्मा, डॉ. चिट्टि बाबु पुच्चा, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित थे।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि में पाउडर एक्सआरडी पर प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केंद्र में पाउडर एक्स-रे डिफ्रेक्टोमीटर पाउडर एक्सआरडी पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल 31 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय और कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुये की। उन्होंने प्रतिभागियों को आगामी कार्यशालाओं की जानकारी भी दी और उन्हें प्रशिक्षण के लिये शुभकामनायें दीं। व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. रणवीर कुमार और डॉ. अनुपमा चंदा प्रभारी शिक्षक पाउडर एक्सआरडी ने प्रतिभागियों को पाउडर एक्सआरडी तकनीक का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने इसके इतिहास, सिद्धांत, सैंपल तैयार करने की विधि और अनुप्रयोगों पर चर्चा की। क्रिस्टलीय गुणों की पहचान, क्रिस्टल साइज निकालने की प्रक्रिया और सुरक्षा प्रोटोकॉल पर विशेष ध्यान दिया गया। हैंड्स ऑन सत्र शिवप्रकाश सोलंकी और सौरभ साह के निर्देशन में आयोजित किया गया। इसमें पाउडर एक्सआरडी उपकरण के हार्डवेयर और सहायक उपकरणों का संक्षिप्त परिचय दिया गया। प्रतिभागियों को सैंपल तैयार करने से लेकर डेटा विश्लेषण तक की संपूर्ण प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया। उन्हें विभिन्न प्रश्नों का समाधान भी दिया गया। पूरे प्रशिक्षण सत्र के दौरान सीएआर की तकनीकी टीम के रमेश सी प्रजापति, डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार, अरविंद चडार और चंद्रप्रकाश सैनी ने तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों ने इसे ज्ञानवर्धक और उपयोगी बताया। इस आयोजन ने प्रतिभागियों को अनुसंधान के क्षेत्र में तकनीकी दक्षता प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया और उनके भविष्य के शोध कार्यों के लिये एक मजबूत आधार तैयार किया।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर
असतो मा सद्गमय

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन
कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)